राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन की मासिक पत्रिका

स्काउट गाइड ज्योति

वर्ष-26 | अंक-07 | जनवरी, 2026 | कुल पृष्ठ-32 | मूल्य-₹ 15

भारत स्काउट व गाइड, राष्ट्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली के 75वें वार्षिक परिषद में राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन से वर्ष 2024-25 की 'चीफ नेशनल कमिश्नर शील्ड' एवं अन्य शील्ड्स प्राप्त करते हुए राजस्थान के राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन एवं अन्य अधिकारी। राजस्थान ने राष्ट्रीय स्तर पर 9 शील्ड्स अपने नाम कर सफलता का परचम फहराया है।

सरदार बल्लभ भाई पटेल जयंती के अवसर पर बीकानेर में आयोजित रन फॉर यूनिटी कार्यक्रम के दौरान केंद्रीय कानून मंत्री श्री अर्जुनराम जी मेघवाल के साथ स्काउट्स

चित्रविथिका

कोटा में भारत स्काउट व गाइड की 75वीं स्थापना की डायमंड जुबली के अवसर पर जारी फ्लैग स्टीकर का विमोचन करते हुए भारतीय लोकसभा के अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी

भारत स्काउट व गाइड, राष्ट्रीय मुख्यालय, नई दिल्ली के सर्वोच्च अवार्ड सिल्वर एलीफेंट से अलंकृत भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी श्री शिव प्रसाद नकाते से शिष्टाचार भेंट करते हुए प्रदेश संगठन के राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन एवं अन्य अधिकारी

स्काउट गाइड ज्योति
वर्ष : 26 अंक : 07
जनवरी, 2026

सलाहकार मण्डल

निरंजन आर्य
आई.ए.एस. (से.नि.)
स्टेट चीफ कमिश्नर

आशीष मोदी, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (स्काउट)

निर्मल पंवार
स्टेट कमिश्नर (रोवर)

डॉ. भंवर लाल, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (कब)

महेन्द्र कुमार पारख, आई.ए.एस.(से.नि.)
स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)

रूक्मणि आर.सिहाग, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (गाइड)

शुचि त्यागी, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (रेंजर)

टीना डाबी, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (बुलबुल)

मुग्धा सिन्हा, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)

स्टेट कमिश्नर (हैडक्वाटर्स–स्काउट)
नवीन महाजन, आई.ए.एस.
नवीन जैन, आई.ए.एस.
टीकम चंद बोहरा, आई.ए.एस.
आर.पी. सिंह, आई.पी.एस. (से.नि.)
डॉ. एस.आर. जैन
डॉ. अखिल शुक्ला
मनीष कुमार शर्मा

राज्य कोषाध्यक्ष
ललित वर्मा

सम्पादक
डॉ. पी.सी.जैन
राज्य सचिव

सहायक सम्पादक
नीरज जैन

इस अंक में

विषय	पृष्ठ संख्या
दिशाबोध	4
संपादकीय	4
राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान सर्वोच्च	5
रक्तदान–महादान	6
तम्बाकू निषेध एवं पर्यावरण जनचेतना	6
नुक्कड़ नाटक	7
संगोष्ठी से जनजागरण	7
लखनवी जम्बूरी	8
नन्हें हाथों से बड़ी सेवा	9
स्काउटिंग का महत्व और मूलभूत सिद्धांत	10
राज्य स्तरीय साहसिक गतिविधि प्रशिक्षण केन्द्र	12
गतिविधि दर्पण	13
राष्ट्रीय ध्वज – बनावट व सम्मान	20
पर्यटन स्थल : रणकपुर	21
हमारा स्वास्थ्य : तुलसी	22
हमारे महापुरुष : पंजाब केसरी लाला लाजपतराय	24
भारतीय ज्ञान परम्परा सामाजिक जरूरतों की उपज	26
दक्षता पदक	29
गतिविधि पंचांग	30

लेखकों से निवेदन

स्काउट गाइड ज्योति का प्रकाशन मात्र प्रकाशन भर नहीं है बल्कि यह पत्रिका हमारे संगठन का दर्पण है, जो आयोजित हो चुकी गतिविधियों को प्रस्तुत करने, संगठन के कार्यों और इसके प्रशिक्षण तथा अन्य समाजोपयोगी क्रियाकलापों के विचारों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम है।

समस्त पाठकों, सृजनात्मक एवं रचनाधर्मी प्रतिभाओं से स्वलिखित, मौलिक व पूर्व में अप्रकाशित स्काउटिंग गाइडिंग से संबंधित लेख, यात्रा वृत्तान्त, कैम्प क्राफ्ट संबंधी लेख, प्रशिक्षण विधि, पाठक प्रतिक्रिया आदि प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। आपके अनुभव प्रत्येक स्काउट गाइड के लिए अमूल्य हैं। आप द्वारा प्रेषित सामग्री आपके नाम व फोटो के साथ प्रकाशित की जावेगी। लेख स्पष्ट टंकित हो तथा उस पर यह अवश्य लिखा हो कि 'यह लेख मौलिक एवं अप्रकाशित है'।

प्रकाशनार्थ सामग्री हमारी ईमेल आई.डी. **scoutguidejyoti@gmail.com** पर भिजवाई जा सकती हैं।

स्काउट गाइड ज्योति वार्षिक सदस्यता शुल्क		आजीवन सदस्यता शुल्क
व्यक्तिगत शुल्क :100/–	संस्थागत शुल्क:150/–	1200/–
शुल्क राशि राज्य मुख्यालय जयपुर पर एम.ओ. अथवा 'राजस्थान स्टेट भारत स्काउट एण्ड गाइड, जयपुर' के नाम डिमान्ड ड्राफ्ट द्वारा जमा कराई जा सकती है।		

नोट : स्काउट गाइड ज्योति में छपे/व्यक्त विचार प्रस्तोता के अपने हैं।
यह जरूरी नहीं है कि संगठन इनसे सहमत ही हो।

दिशाबोध

राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान सर्वोच्च

स्काउट गाइड संगठन गैर राजनैतिक विश्वव्यापी संगठन है, जो वसुधैव कुटुम्ब की भावना एवं विचारधारा से ओत–प्रोत है। इस संगठन की विशेषता है कि जिस भी कार्यकर्ता को जो भी कार्य दिया जाता है उसके द्वारा वह पूरी कर्तव्यनिष्ठा के साथ पूर्ण किया जाता है। राजस्थान प्रदेश स्काउट गाइड संगठन का राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त करना आप की कर्तव्यनिष्ठा का ही परिणाम है। इसके लिए मैं प्रदेश संगठन के समस्त ऑर्गेनाइजर, आयुक्त, अधीनस्थ, मंत्रालयिक व सहायक कार्मिकों, अधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को, जिनके अथक प्रयासों से राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान को यह गौरव प्राप्त हुआ है, हार्दिक बधाई एवं धन्यवाद अर्पित करता हूँ। मुझे विश्वास है कि भविष्य में भी आप इसी प्रकार पूरी लगन, निष्ठा एवं कर्तव्य परायणता से कार्य करते रहेंगे।

नववर्ष की शुभकामनाएं अग्रेषित करने के साथ ही मुझे उम्मीद है कि प्रथम मास में राष्ट्र का गौरव 'गणतन्त्र दिवस' विशेष धूम धाम से मनाया जायेगा। इसी माह छत्तीसगढ़ में प्रथम राष्ट्रीय रोवर रेंजर जम्बूरी आयोजित हो रही है, जिसमें प्रदेश के रोवर रेंजर सफलता का परचम फहराएंगे। गणतन्त्र दिवस के अति विशिष्ट मौके पर एक सुप्रसिद्ध गीत की कुछ पंक्तियां याद दिला कर मिल जुल कर राष्ट्र आराधना करने का आह्वान भी कर रहा हूं......

हम करें राष्ट्र आराधन

तन से, मन से, धन से
तन मन धन जीवन से.....हम करें राष्ट्र आराधन

अपने हँसते शैशव से
अपने खिलते यौवन से
प्रौढ़ता पूर्ण जीवन से.....हम करें राष्ट्र का अर्चन
अपने अतीत को पढ़कर
अपना इतिहास उलट कर
अपना भवितव्य समझ कर....हम करें राष्ट्र का चिंतन
हम करें राष्ट्र आराधन
हम करें राष्ट्र आराधन.. आराधन

निरंजन आर्य
स्टेट चीफ कमिश्नर

संपादकीय

गत पाँच वर्षों में राज्य संगठन ने अपनी गतिविधियों में श्रेष्ठता एवं नवाचार के साथ–साथ संख्यात्मक वृद्धि पर विशेष बल दिया है। नियमित रूप से शिक्षकों को बेसिक कोर्स का प्रशिक्षण देकर संख्यात्मक वृद्धि को नवीनतम ऊँचाइयों पर पहुँचाने में सफलता अर्जित की है। गणना वृद्धि के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान अग्रणी भूमिका निभा रहा है। प्रदेश संगठन की गुणात्मक एवं संख्यात्मक प्रगति का ही परिणाम है कि राजस्थान इस वर्ष भी राष्ट्रीय अवार्ड प्राप्त करने की न केवल अपनी परम्परा बनाये हुए है। पिछली सफलताओं के क्रम को आगे बढ़ाते हुए सत्र 2024–25 के लिए राजस्थान ने राष्ट्रीय स्तर पर स्काउट व गाइड दोनों विभागों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चीफ नेशनल कमिश्नर शील्ड अपने नाम करने का गौरव प्राप्त किया है। राजस्थान ने 9 शील्ड प्राप्त कर राष्ट्रीय स्तर पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर अपनी श्रेष्ठता साबित की है।

राजस्थान अपनी विविध गतिविधियों के कारण पूरे राष्ट्र में विशिष्ट स्थान बनाए हुए है। हमें गर्व है कि हमारा स्काउट गाइड संगठन प्रदेश में विद्यमान अनेक वर्गों यथा पालनहार, पिछड़ी जाति, आदिवासी, विकलांग, निःशक्तजन आदि के विकास और उत्थान के लिए प्रयत्नशील है। इन विशिष्ट वर्गों के बालक–बालिकाओं के लिए गतिविधियों एवं शिविरों का निःशुल्क आयोजन गत कई वर्षों से नियमित रूप से किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्तर पर संचालित मरू एवं ग्रामीण स्काउटिंग जैसी ईकाइयों का शुभारम्भ भी राजस्थान की ही उपलब्धि है।

प्रदेश को प्राप्त समस्त पुरस्कार संगठन के सभी कार्यकर्ताओं को समर्पित हैं, जिनकी लगन, मेहनत और समर्पण भाव के कारण ही राज्य संगठन को पूरे राष्ट्र में अग्रणी स्थान प्राप्त हुआ है। भविष्य में भी हमारा यह स्थान यथावत रहे, इसके लिए हमें कृत संकल्प होकर सभी दिशाओं में सक्रिय एवं क्रियाशील रहना है।

डॉ. पी.सी. जैन
राज्य सचिव

स्काउट गाइड की 9 शील्ड्स

राष्ट्रीय स्तर पर राजस्थान सर्वोच्च

सम्पूर्ण प्रदेश के लिए गर्व का विषय है कि राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड ने पूर्व वर्षों की भांति वर्ष 2024—25 में भी राष्ट्रीय स्तर पर 9 शील्ड प्राप्त कर अपना सर्वोच्च स्थान बरकरार रखकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। राजस्थान की इस ऐतिहासिक उपलब्धि का श्रेय संगठन के समस्त कार्यकर्ताओं की मेहनत को देते हुए स्टेट चीफ कमिश्नर निरंजन आर्य ने सभी को हार्दिक बधाई दी है।

राष्ट्रीय परिषद् के नई दिल्ली में आयोजित वार्षिक अधिवेशन में राजस्थान को स्काउट व गाइड दोनों विभागों में देश भर में सर्वोत्कृष्ट प्रदर्शन के लिये चीफ नेशनल कमिश्नर शील्ड प्रदान की गई। इसी प्रकार गणना वृद्धि में भी राजस्थान ने समग्र गणना की राष्ट्रीय शील्ड प्राप्त की। गणना वृद्धि में राजस्थान निम्नानुसार विभागवार प्रथम स्थान पर रहा।

भारत स्काउट व गाइड के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार जैन, सीएनसी डॉ. के.के. खण्डेलवाल, एससीसी कर्नाटका पीजीआर सिंधिया एवं एम.ए.खालिद के करकमलों से तीन सर्वोच्च स्थान के साथ राजस्थान ने कुल 9 शील्ड प्राप्त की। सभी पुरस्कार प्रदेश संगठन से राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन, राज्य संगठन आयुक्त (स्काउट) पूरण सिंह शेखावत, राज्य प्रशिक्षण आयुक्त (स्काउट) बन्ना लाल तथा कार्यवाहक राज्य संगठन आयुक्त (गाइड) सुयश लोढ़ा ने सदन में बार—बार होने वाली करतल ध्वनि के बीच प्राप्त किये। मंच पर राष्ट्रीय मुख्यालय की निदेशक दर्शना पावस्कर, कार्यकारी निदेशक अमर बी.क्षेत्री एवं उप निदेशक सुरेखा श्रीवास्तव भी उपस्थित थे।

राष्ट्रीय स्तर पर सत्र 2024-25 के राजस्थान को प्राप्त अवार्ड

क्र.सं.	अवार्ड श्रेणी	विभाग	स्थान
1.	चीफ नेशनल कमिश्नर शील्ड	स्काउट	प्रथम
2.	चीफ नेशनल कमिश्नर शील्ड	गाइड	प्रथम
3.	समग्र गणना वृद्धि	स्काउट व गाइड	प्रथम
4.	गणना वृद्धि	स्काउट	प्रथम
5.	गणना वृद्धि	गाइड	द्वितीय
6.	गणना वृद्धि	रोवर	प्रथम
7.	गणना वृद्धि	रेंजर	प्रथम
8.	गणना वृद्धि	कब	प्रथम
9.	गणना वृद्धि	बुलबुल	प्रथम

रक्तदान–महादान

भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, बीकानेर द्वारा 29 नवम्बर, 2025 को स्थानीय संघ के हॉल में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। यह रक्तदान शिविर प्रतिवर्ष 29 नवम्बर को स्वर्गीय सुभाषचन्द्र सुथार, स्वर्गीय कैलाश चन्द्र सुथार, स्वर्गीय डूंगरमल सुथार एव स्वर्गीय बृजमोहन पुरोहित (पूर्व एल. ए. सचिव एवं ए.एल.टी.) की स्मृति में आयोजित किया जाता है।

इस वर्ष यह लगातार 12वॉ वार्षिक रक्तदान शिविर था। रक्तदान शिविर का शुभारम्भ श्री राजेश चूरा–प्रधान, श्री पी.के. मित्तल–चैयरमेन एवं श्री आर.के. धूड़िया–निदेशक, प्रसार, पशु चिकित्सा विज्ञान एवं विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इस आयोजन में रोवर्स स्काउट्स के साथ साथ स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, एचडीएफसी, आदित्य बिड़ला सन लाईफ इंश्योरेंस कंपनी, कॉन्सेप्ट इंस्टीट्यूट, पशु चिकित्सा विज्ञान विश्वविद्यालय, शिक्षा विभाग एवं समाज के अन्य गणमान्य युवाओं एवं महिलाओं द्वारा भी रक्तदान किया गया।

श्री गौरव सुथार द्वारा 12वीं बार लगातार रक्तदान किया गया। जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्रो. रोवर लीडर श्री के.के. खत्री ने स्वयं द्वारा एवं उनके नेतृत्व में रोवर स्काउट्स ने रक्तदान किया। इस शिविर में राजकीय पीबीएम हॉस्पीटल के ब्लड बैंक की टीम द्वारा कुल 75 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

इस अवसर पर डॉ. विजय शंकर आचार्य–पूर्व मण्डल चीफ कमिशनर, डॉ. उमाकान्त गुप्त, एएलटी, श्री घनश्याम स्वामी, एएलटी, प्रो. के.के. खत्री, रोवर लीडर, श्री निखिल माथुर, श्री मांगीलाल सुथार–वरिष्ठ स्काउटर, श्री केशरी चन्द सुथार–उप प्रधान, श्री शांति प्रसाद बिस्सा–कोषाध्यक्ष, श्री देवानन्द पुरोहित–एल.टी., श्री भुवनेश्वर साध–सचिव, स्थानीय संघ, श्री विजय कृष्ण शर्मा, स्काउटर, श्री रामेश्वर मारू, स्काउटर, श्री भवानी शंकर जोशी–गंगाशहर एलए–प्रधान, श्री प्रभुदयाल गहलोत–गंगाशहर एलए.–सचिव, श्री वाई.के.शर्मा, श्री मनोज पुरोहित, श्री कन्हैया लाल पुरोहित, श्री ओम सुथार, श्री गोविंद सुथार, श्री भालाराम आदि ने रक्तदाताओं को प्रोत्साहित किया एंव कार्यक्रम को सफल बनाया।

तंबाकू निषेध एवं पर्यावरण जनचेतना

भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, सिरोही द्वारा आयोजित 5 दिवसीय जिला स्तरीय निपुण रोवर रेंजर प्रशिक्षण शिविर में 20 दिसम्बर को स्काउट गाइड जिला मुख्यालय से स्वच्छता तंबाकू निषेध एवं पर्यावरण जनचेतना रैली निकाली गई। शैलेंद्र सिंह राठौड़ प्राचार्य राजकीय महिला महाविद्यालय सिरोही एवं सी.ओ. स्काउट एम.आर. वर्मा व गणपतसिंह देवड़ा पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। रैली में स्काउट गाइड एवं रोवर रेंजर स्वच्छता, नशा मुक्ति एवं पर्यावरण संरक्षण के नारे लगाते हुए चल रहे थे। रैली अहिंसा सर्किल, जेल चौराहा, सरजावा दरवाजा, बस स्टैंड होते हुए वापिस स्काउट मुख्यालय सिरोही में विसर्जित हुई। इस रैली में स्काउट गाइड एवं रोवर रेंजर ने आमजन को स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण एवं नशा न करने का संदेश दिया। रैली में तोला राम फाचरिया, मोहित अग्रवाल, रोहित कुमार, आमीर हसन, दृष्टि पांडे, रवीना राणा, आरती कुमारी, निधि रावल, नीलम कंवर, दीपिका देवासी, दिव्यांशी, रेशमा कुमारी, हिमांशी, निकिता कुंवर सोलंकी, डिंपल कुमारी, रिंकू कुमारी, ममता कुमारी आदि ने सहयोग किया और सभी स्काउट गाइड रोवर रेंजर को नशा न करने की शपथ दिलायी गई।

नुक्कड़ नाटक

भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, बारां के तत्वावधान में संविधान दिवस के अवसर पर संविधान के बारे में जानकारी देते संविधान की स्काउट गाइड को शपथ दिलाई गई। उसके उपरांत पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के तहत सर्कल ऑर्गेनाइजर प्रदीप चित्तौड़ा के सान्निध्य में बारां शहर के विभिन्न चौराहों पर जाकर नुक्कड़ नाटक के माध्यम से सिंगल यूज प्लास्टिक पर अंकुश, ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण, प्रदूषण पर रोक आदि विषयों को लेकर बारां शहर के जनमानस को संदेश देकर पर्यावरण जैसे विषय पर जागरूक किया। प्रदीप चित्तौड़ा ने बताया कि यह कार्यक्रम पूरे जिले में सभी स्थानीय संघों के मुख्यालयों के साथ–साथ गांव गांव ढाणी ढाणी तक पहुंचाया जाएगा। छीपाबड़ौद के सचिव इंद्र कुमार शर्मा ने बताया कि पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम में नन्हे नन्हे कब बुलबुल के माध्यम से जागरुक करते हुए सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए कार्य किया जा रहा है। स्काउट गाइड ने चार मूर्ति चौराहा, प्रताप चौक, धर्मदा चौराहा आदि पर नुक्कड़ नाटक कर संदेश प्रदान दिया। अंत में रोवर लीडर महेश सैन द्वारा सभी स्काउट गाइड को स्काउट गाइड के पांचवें नियम स्काउट पशु पक्षियों का मित्र एवं प्रकृति प्रेमी होता है, का संदेश देते हुए पर्यावरण संरक्षण का संकल्प दिलाया। जिला हैडक्वार्टर कमिश्नर भैरूलाल वर्मा ने सभी स्काउट गाइड को धन्यवाद देते हुए इस संदेश को अपने–अपने मौहल्ले में प्रदान करने का आव्हान किया।

संगोष्ठी से जनजागरण

भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, बारां पर सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती के अवसर पर एक संगोष्ठी वरुण रास्सेवट एवं दीपिका सिंह समाजसेवी कोटा संभाग के मुख्य आथित्य में आयोजित की गई। संगोष्ठी में सर्कल ऑर्गेनाइजर स्काउट प्रदीप चित्तौड़ा ने सरदार वल्लभभाई पटेल की जीवनी की जानकारी देते हुए सभी को समाज में एकता बनाए रखने का स्काउट गाइड प्रतिज्ञा के साथ संकल्प दिलाया। इस अवसर पर वरुण ने सभी स्काउट गाइड रोवर रेंजर को मोबाइल के माध्यम से किस–किस प्रकार से साइबर क्राइम हो सकते हैं, के बारे में विस्तार से बताते हुए उनसे बचने के तरीके बताएं। इस अवसर पर दीपिका सिंह ने साइबर क्राइम के साथ–साथ आज के वातावरण में बालिकाओं को किस प्रकार से अपने आप को बचाए रखना है, के आत्मरक्षा के टिप्स प्रदान किए। संगोष्ठी का संचालन कर रहे रोवर लीडर महेश सैन ने सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए स्काउट गाइड के नियम के माध्यम से अनुशासित रहने एवं सार्वजनिक संपत्ति की रक्षा करने का संकल्प दिलाया। संगोष्ठी में जिला हैडक्वार्टर कमिश्नर भैरूलाल वर्मा ने पर्यावरण संरक्षण का एक गीत सुनाकर सभी को पौधारोपण करने के लिए निवेदन किया। प्रदीप चित्तौड़ा ने बताया कि जिले में दिसंबर माह में सिंगल यूज प्लास्टिक पर अंकुश, ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण एवं प्रदूषण पर रोक आदि कार्यक्रम पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के तहत करते हुए संपूर्ण जिले में जन जागरण कार्यक्रम के लिए संगोष्ठी, रैली, नुक्कड़ नाटक आदि के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन सभी कार्यक्रम के लिए जिला स्तर की प्रभारी सुनीता मीणा एवं स्थानीय संघ स्तर पर शाहाबाद स्थानीय संघ के अमजद यूसुफी, अटरू के राजेंद्र कुमार शर्मा, छबड़ा के घनश्याम भार्गव, छीपाबड़ौद के इंद्र कुमार शर्मा, किशनगंज के ब्रज गोविंद टेलर, अंता के पवन कुमार मेहरा, बारां के भेरूलाल वर्मा बनाए गए हैं। इनके नेतृत्व में सभी स्थानीय संघ के ट्रेनिंग काउंसलर के माध्यम से स्काउट गाइड और रेंजर जन जागरण का कार्य करेंगे।

स्काउट की कलम से

लखनवी जंबूरी

गोविंद 'डागुर'
प्राचार्य, रा.उ.मा.वि. कमलपुरा (भरतपुर)
निवास - धरसोनी, वैर

22 नवंबर की प्रभात में जब प्रातः पाँच बजे हमने लखनऊ की जमीन पर कदम रखा, तो बरबस ही यहाँ के प्रिय शायर जोश मलीहाबादी का एक शेर याद आ गया–

जहमत न हो तो दर पे जरा चल के देख लो,

आया है कोई अपना पता पूछता हुआ

सुबह सर्द तो थी, लेकिन जयपुर के जगतपुरा जैसी तिरछी कटार नहीं। नवाबों की स्थापत्य कला का आभास स्टेशन से ही मिलने लगा। अपना साजो–सामान समेटकर जैसे ही स्टेशन से बाहर आए, राजस्थान से पहुँचे स्काउट–गाइड का नील, लोहित और रक्तिम वर्णों का समुद्र हिलोरें मार रहा था।

बसों द्वारा हम सब लखनऊ के डिफेंस एक्सपो ग्राउंड पहुँचे। दल प्रभारी ने हमें आवंटित टेंटों की संख्या बता दी। देखते–देखते खाली पड़े तंबू संजीव हो उठे। जगतपुरा से साथ लाए गए पाथेय को उदरस्थ कर अपने प्रिय अस्थायी घर के श्रृंगार का कार्य आरंभ हुआ। साथ लाए गए बाँसों के गट्ठर, रस्सियाँ, झंडियाँ, झालरें निकाली गईं। लोहे के बक्सों से फावड़े और खुरपियाँ बाहर आईं।

तंबुओं के कायाकल्प में जुटे उत्साहित स्काउट–गाइड का वह दृश्य मानो मनुष्य के जंगलीपन से सभ्यता की ओर बढ़ते कदमों को साकार कर रहा था। बच्चों ने स्नान को अधिक आवश्यक नहीं समझा। आगामी सात दिनों के लिए रहने वाले इस अस्थायी किंतु प्रिय घर को संवारने में सभी जुट गए। हमारा टेंट नंबर था–64।

हमारे टेंट के सामने ही सभी राज्यों की भोजनशालाएँ थीं। इसका लाभ यह हुआ कि भारतवर्ष के कोने–कोने से आए स्काउट, गाइड, स्काउटर और गाइडर से मिलने का अवसर मिला। बिहार का पंडाल तो ठीक सामने ही था। कुल मिलाकर पूरे सात दिन हमारे तंबू के द्वार और सामने से गुजरने वाले मार्ग पर धूम और धूल बनी रही।

टिन और लोहे के पाइपों से स्नानघर व गुसलखाने बनाए गए थे। त्रिची (तमिलनाडु) की जंबूरी में ये फाइबर के बने थे, किंतु यहाँ वेल्डिंग कर स्थायी सीटों के साथ बनाए गए थे। नहाते समय प्रतिदिन बादलों की गड़गड़ाहट का आनंद मिलता। जरा–सा हाथ लगते ही टीन का स्नानघर धड़धड़ा उठता। एक खास बात यह भी थी कि ब्रश, पेस्ट या दर्पण को पाइप और टीन के बीच खोंसकर रखा जा सकता थाकृयह प्रयोग मैंने तो किया, बाकी का पता नहीं।

स्नानघरों में ताजा पानी उपलब्ध था, क्योंकि मैदान में गहरे बोर लगाए गए थे और टंकियाँ आवश्यकता अनुसार भरी जाती रहीं।

एक विशाल एरिना बनाया गया था, जिसे त्रिची जंबूरी की प्रतिलिपि कहा जा सकता है। इसकी विशेषता थी चारों ओर लगे बड़े–बड़े होर्डिंग्स, जिनमें रामायण तथा भारत के प्रमुख ऐतिहासिक प्रसंगों को अत्यंत सुंदरता से चित्रित किया गया था। यह हमारी सनातन विरासत का भव्य दृश्य था। एरिना के मुख्य एवं मध्य मंच के चारों ओर लगी एलईडी स्क्रीन ने इसकी भव्यता को और बढ़ा दिया।

जंबूरी का शुभारंभ हो चुका था। उद्घाटन के लिए अभ्यास चलता रहा। राजस्थान की कलर पार्टी का चयन हुआ। राजस्थान को गौरवान्वित करने का यह पहला अवसर था। उद्घाटन सत्र में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ उपस्थित रहे। उनका उद्बोधन युवा शक्ति को जोश और प्रेरणा से भर देने वाला था।

प्रतियोगिताएँ प्रारंभ हुईं। राजस्थान के प्रत्येक मंडल ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। ग्लोबल विलेज को अत्यंत सुंदर स्वरूप प्रदान किया गया। फन एक्टिविटीज और एडवेंचर एरिया बच्चों के लिए विशेष आकर्षण रहे। देश–भर से आए युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और अपने–अपने एक्टिविटी कार्ड पर मोहरें लगवाईं। शायद ही कोई ऐसा उत्सव हो जहाँ बच्चों को इतना आनंद मिलता हो।

तंबुओं के आसपास केवल लाठियों और रस्सियों से झूले, टेबल, कुर्सियाँ, चारपाइयाँ, बाल्टी स्टैंड, बर्तन स्टैंड, कपड़ा और जूता स्टैंड जैसे उपयोगी साधन बनाए गए। स्काउट जंगली और प्राकृतिक वस्तुओं के सहारे दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तुएँ गढ़ सकता है। वह पुल बना सकता है, बुर्ज खड़ा कर सकता है, नदी को बाँध सकता है और आकाश को नाप सकता है। स्काउट प्रकृति का पुत्र होता है–अभाव में और निखरता हुआ, परिस्थितियों पर सवार होकर मंजिल तक पहुँचने वाला।

हर बीस मिनट में गुजरने वाली चील (वायुयान) बच्चों के लिए विशेष आकर्षण बनी रही। इतना निकट से उड़ते विमान बहुतों ने पहली बार देखे। शाम के समय ड्रोन शो ने सभी को विस्मित कर दिया–सैकड़ों ड्रोन आकाश में आकृतियाँ, प्रतीक और अक्षर गढ़ रहे थे।

देश–भर की झांकियों ने भारत की सांस्कृतिक विविधता के दर्शन कराए। हमने भी राजस्थान की झांकियाँ प्रस्तुत कीं। होली

के अवसर पर गुलाल उड़ी, राजस्थान दिवस पर पारंपरिक परिधान पहने गए। ढोल की थाप, नृत्य और उल्लास ने माहौल को जीवंत कर दिया।

फूड प्लाजा के 64 प्रकार के व्यंजनों का स्वाद लेकर मानो किसी देव–लोक की अनुभूति हुई। प्रत्येक रात्रि एरिना में विभिन्न राज्यों और देशों के नृत्यों के साथ हम सब झूमते रहे। चेहरे भले ही अनजान थे, शब्द भले ही अपरिचित, पर उस मेले में सब कुछ अपना–सा लग रहा था।

समापन सत्र में महामहिम राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू पधारीं और सलामी ली। उन्हें निकट से देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। राजस्थान सभी प्रतियोगिताओं में विजयी रहा। राजस्थान के दोनों प्रवेश द्वार पूरे सात दिन गर्व से सीना ताने खड़े रहे।

लखनऊ की तहजीब और नफासत को मन में बसाए, उसकी स्मृतियों का वितान समेटे, हम अपने नीड़ की ओर लौट चले. .. और मन के किसी कोने से ये शब्द फूट पड़े–

तेरी तहजीब का असर है,
सफर आसान हुआ है।
कि मंजिल दूर थी तो क्या हुआ,
दुआओं में कोई मेहरबान हुआ है।
दोस्ती हो गई तो हो गई जी,
गवाह इसका ये आसमान हुआ है।
यह लहजा लखनवी मेरा हुआ क्यों,
लगे है फिर कोई जानाँ हुआ है।
बेरंग–सी इस जिंदगी में,
फिर से जीने का अरमाँ हुआ है।
याद आएँगे वो दिन, वो रातें,
लखनवी इश्क दिल–चस्पां हुआ है।

नन्हें हाथों से बड़ी सेवा

सेंट मैरी स्कूल, जयपुर रोड़, सीकर में संचालित राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड से जुड़े कब बुलबुल स्काउट गाइड ने अपने अभिभावकों एवं अपनी पॉकेट मनी की राशि सेवा के लिए प्रदान कर मिसाल कायम की।

प्रिंसिपल सिस्टर रीना, फादर मैनेजर फादर जोबी के मार्गदर्शन में बसन्त कुमार लाटा सी.ओ. स्काउट व विद्यालय के स्काउट गाइड शिक्षक, शिक्षिका बबीता गोदारा, मफलदीना, योग्यता राणा, विक्रम शेखावत, कस्तूरबा सेवा संस्थान भादवासी पहुंचे और वहां रहने वाले छात्रों के लिए उपयोगी सामग्री, खेल सामग्री, विभिन्न प्रकार की लाइब्रेरी की किताबें, आवश्यकता के अनुसार कॉपियां, विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री भेंट कर दूसरों की सहायता करने की प्रतिज्ञा व स्काउट गाइड प्रार्थना की पंक्तियां हमारा कर्म हो सेवा हमारा धर्म हो सेवा का पालन किया।

इन नन्हे नन्हे बालक बालिकाओं ने यह सिद्ध किया कि यदि व्यक्ति चाहे तो समाज के हर तबके की जरूरत के हिसाब से मदद की जा सकती है। इस अवसर पर बबीता गोदारा और बसंत कुमार लाटा ने सभी छात्रों, कब बुलबुल, स्काउट गाइड को सेवा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, सेवा का पाठ पढ़ाया।

इस कार्य के लिए स्काउट गाइड परिवार की ओर से सभी कब बुलबुल स्काउट गाइड व उनके अभिभावक, विद्यालय के सदस्यों को धन्यवाद दिया। इस अवसर पर विभिन्न प्रकार के गीत गए खेल खेले। सेंट मैरी स्कूल सीकर के कब बुलबुल स्काउट गाइड ने कस्तूरबा सेवा संस्थान के छात्रों के साथ साथ वॉलीबॉल, फुटबॉल, बैडमिंटन के मैत्री खेल खेले। कार्यक्रम के दौरान कस्तूरबा सेवा संस्थान के प्रबंधक सुमित्रा शर्मा, हरिनारायण सिंह, अन्य स्टाफ सदस्य व 114 कब बुलबुल स्काउट गाइड व छात्र उपस्थित रहे।

स्काउटिंग का महत्व और मूलभूत सिद्धान्त

कोई भी राष्ट्र उसके नागरिकों से सुदृढ़ बनता है। व्यक्ति से समाज एवं समाज से राष्ट्र का निर्माण होता है, तथा सुनागरिक ही राष्ट्र की असली निधि होती है। सुनागरिकता के लिए स्काउटिंग एक अहम आन्दोलन है।

चरित्र :

व्यक्ति का चारित्रिक विकास सुनागरिकता की पहली कड़ी है। स्काउटिंग प्रवृत्ति में कब/बुलबुल, स्काउट/गाइड, रोवर/रेंजर सभी स्तरों पर समय–समय पर पेट्रोल दल पद्धति, शिविर, सम्मेलन, मूट/मीट आदि के द्वारा चारित्रिक विशेषताओं का प्रादुर्भाव व विकास कराया जाता है। चरित्र के विकास का कार्य स्काउटिंग की प्रथम कड़ी है जो सुनागरिकता का आधार है।

चारित्रिक विकास तभी हो सकता है जब व्यक्ति में आत्मसम्मान, व्यक्तित्व, आत्मशिक्षण, साहस, बुद्धिमानी, भौतिक, मानसिक एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास, कर्तव्यनिष्ठा, समय की पाबन्दी आदि गुणों का समावेश हो जाता है।

देशभक्ति :

प्रत्येक नागरिक जो किसी भी राष्ट्र का अभिन्न अंग है, में अपने देश, धरती और समाज के प्रति स्वामिभक्ति, देशभक्ति होना नितांत आवश्यक है। इस कड़ी में प्रत्येक स्काउट को एक मनका बनकर वृहत् माला को साकार सम्पूर्ण रूप प्रदान करता है।

अनुशासन :

दिये गये कार्यों को निश्चित तरीके से विहित नियमों के अधीन रहकर सम्पादन करे, उसे अनुशासन कहते हैं। अनुशासित जीवन कार्यों के सम्पादन, परीक्षण एवं निस्तारण हेतु अत्यन्त आवश्यक है। टोली विधि से व्यक्तिगत और सामूहिक प्रशिक्षण, लीडर द्वारा मार्गदर्शित कार्य करना स्काउट आन्दोलन की जान कही जाती है, जो अन्त में अनुशासित सुनागरिक बनाने में मदद करती है।

कर्तव्यनिष्ठा :

कर्तव्य के प्रति जागरूकता, निष्ठा, सद्भाव तथा सुरुचि होना अत्यन्त आवश्यक है। आदेशों की यथानुरूप पालना करना ही कर्तव्यपरायणता है। जो भी कार्य जिस किसी भी परिस्थिति में करने हेतु प्राप्त हुआ है। उसका पालन करना ही श्रेयस्कर है। स्काउंटिग कर्त्तव्य के प्रति रूचि जाग्रत करने और उपयोगी कार्यों को करने का विशिष्ट प्रशिक्षण प्रदान करती है ताकि भावी जीवन में अपने कार्यों के सफल संचालन द्वारा समाज और राष्ट्र विकास में अपना योगदान दे सके।

शारीरिक और बौद्धिक विकास :

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क होता है और निरोग काया ही सफलता, प्रसन्नता तथा सक्रियता की कुंजी है। शारीरिक सबलता के बिना कठिन परिश्रम सम्भव नहीं और बिना कठोर परिश्रम के सफलता प्राप्त नहीं होती है। इतना ही नहीं वरन् डूबते हुए को बचाना, अग्निशमन, बाढ़ में फँसे हुए व्यक्तियों को निकालना आदि कार्य की कुशलता पर तो निर्भर करते ही हैं किन्तु स्वस्थ शरीर भी इसके लिए एक अत्यन्त आवश्यक अर्हता है। इन सभी प्रशिक्षण के लिए स्काउटिंग में खेलकूद, पी.टी, ट्रेकिंग, पर्वतारोहण, हाइकिंग, किमगेम आदि द्वारा पूर्ण व्यावहारिक ज्ञान प्रदान कराया जाता है। अतः शारीरिक क्षमता भी इसका आधार है।

इसके अलावा बौद्धिक विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना भौतिक विकास। स्काउटिंग के माध्यम से व्याख्यान, संगोष्ठी, वाद–विवाद, भ्रमण (स्थानीय क्षेत्रीय अन्तःक्षेत्रीय), सम्पर्क, भाषण इत्यादि का आयोजन कर प्रत्येक सदस्य को मानसिक रूप से तैयार किया जाता है।

कला :

प्रत्येक कार्य को पूर्ण करने हेतु कला की आवश्यकता होती है। कला का विकास कार्य करने और कार्य के प्रति रूचि जाग्रत करने पर ही संभव है। हर दिन हर कार्य समझ–बूझकर करना ही श्रेयस्कर है अन्यथा कार्य के अपूर्ण रहने, बिगड़ने, असफल होने का पूर्ण अंदेशा रहता है। स्काउटिंग आन्दोलन एक ऐसी विधा है जिसके द्वारा जम्बूरी, साहसिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रमों में योगदान, पेट्रोल (टोली) या दल पद्धति से कार्य करना सभी से निपुणता, प्रवीणता एवं कुशलता प्राप्त होती है। गेजेट्स निर्माण, पायोनियरिंग, स्वपाक विधि, मार्गदर्शिका, शिविर कला आदि कला व कुशलता के सुन्दर सोपान है।

स्वामिभक्ति :

कोई भी कार्य हो या व्यक्ति हो उसके प्रति पूर्ण निष्ठा तथा समर्पण ही साधक के लिए सर्वोपरि है। यदि वह पूर्ण निष्ठा से कार्य में तल्लीन नहीं होगा तो अवश्य उसे सम्बल प्राप्त नहीं होगा और न ही कार्य के प्रति रूचि जागृत होगी। चेतक की महाराणा प्रताप के प्रति, भामाशाह की महाराणा के प्रति, जयमल और पत्ता की चित्तौड़ के राणा के प्रति स्वामिभक्ति के अनुपम उदाहरण है, जिन्होंने अपने मालिक के प्रति पूर्ण स्वामिभक्ति का परिचय दिया। स्वामिभक्ति, देशभक्ति आदि गुणों का विकास स्काउटिंग टोली विधि से करती है व टोली के सदस्यों में भाव पैदा कर इन सदगुणों का प्रादुर्भाव करती है।

अतः उक्त बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए क्रमशः मूलभूत सिद्धान्तों की अग्रिम पंक्तियों में व्याख्या सम्मिलित है।

1. ईश्वर/धर्म के प्रति कर्त्तव्य :

सूर्य समय पर हर रोज पूर्व में लालिमा के साथ उदय होता है तथा पश्चिम में समयानुकूल अस्त होता है।

समय पर ऋतु परिवर्तन होता है। चन्द्रदर्शन, चन्द्रकलायें, तारामण्डल का आविर्भाव, हैली पुच्छल तारे का प्रति 76 वर्ष बाद दिखाई देना आदि ये सब किसी अदृश्य शक्ति के निर्देशों का पालन कर रहे है। क्यों ये समय पर दृष्टव्य होते है? कैसे इनकी उपस्थिति समय से ओझल हो जाती है। ये सब उस सर्वशक्तिमान परमात्मा का अपना संसार है जिसका वह नियामक है। दृष्टा है, सर्वहारा है और पालनहारा है। यह उसका प्रथम मूलभूत सिद्धान्त है।

2. देश के प्रति निष्ठा :

प्रत्येक नागरिक को अपने देश के प्रति आस्थावान, निष्ठावान तथा देशभक्त होना चाहिए। स्काउट आन्दोलन देश सेवा के प्रति कटिबद्ध नवयुवकों का अंबार लगाता है तथा देशभक्त प्रौढ़ों का निर्माण करने की नर्सरी है। इसके लिए हमें पूर्ण प्रोत्साहन देने की कोशिश करनी चाहिए ताकि देशभक्त नौजवानों से देश पूरित रहे।

3. विश्व मैत्री और विश्व बन्धुत्व में विश्वास :

स्काउटिंग सम्पूर्ण विश्व को एक परिवार मानकर चलती है। ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की उक्ति सही रूप में चरितार्थ कर हर देश के नागरिक को स्काउट के रूप में दूसरे देश का स्काउट अपनत्व, सद्भाव, सदाचार, आदर, सहयोग के साथ स्वीकार करता है। स्काउट आन्दोलन में जाति, धर्म, देश, सम्प्रदाय आदि की सीमाबद्ध बन्धन नहीं दिखाई देती है न कोई रंग–भेद और प्रांतीय भेद ही इसकी परिधि को छूता है। हमारा मूल मंत्र रहा है– सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया। सर्वे भद्राणी पश्यन्तु, मा कश्चित् दुख भाग् भवेत्।। संसार में सभी के लिए प्रसन्नता, कल्याण, सुख समृद्धि आदि की इच्छा रखते हुए स्काउट आन्दोलन अपना अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप रखे हुई है।

4. स्काउट नियम और प्रतिज्ञा में अभिव्यक्त आदर्शों की स्वीकृति व क्रियान्विति

मानव मात्र को संसार सागर में सम्बल प्रदान करने, सुखी और संयमी जीवन का अनुसरण करने तथा जीवन प्रसन्नता से जीकर सफल जीवन यात्रा पूर्ण करने के लिए निहित सभी उपदेश और जीवन दर्शन की मार्मिक भावनाएँ स्काउट प्रतिज्ञाओं और नियमों में विद्यमान है। अतः इन सभी आदर्शों, देश, समाज, परिवार, एवं विश्व के प्रति समर्पित भावना आदि के कार्य करना ही स्काउट आन्दोलन का आधारभूत ढांचा और उनकी स्थापना स्वीकारोक्ति तथा जीवन में क्रियान्विति ही सुखी जीवन की यात्रा के लिए उपयोगी तत्व है।

5. स्वैच्छिक सदस्यता :

बेडेन पावेल स्काउटिंग के जन्मदाता ने लिखा है कि स्काउटिंग बाहर से प्राप्त करने की वस्तु नहीं है। वरन् यह स्वयं की अन्तरात्मा से उद्भूत अनुभूति का ही रूप है। व्यक्ति खुद इच्छा से इसकी सदस्यता ग्रहण करता है तथा स्वेच्छा से ही सारे कार्य स्काउट नियमों के अन्तर्गत सम्पन करता है। परिणामतः बाहरी दबाव का अनुभव किये बिना व्यक्ति स्वेच्छा एवं स्वशासन से निर्भयता पूर्वक समाज के उत्थान तथा मानवमात्र के कल्याण के लिए कार्य करता है।

6. गैर–राजनैतिक संगठन :

यह संगठन गैर–राजनैतिक है। सदस्यता सभी के लिए खुली हुई है। अपनी हॉबी के अनुसार प्रवेश से प्रशिक्षण प्राप्त कर सकते हैं। अतः इस आन्दोलन का स्वरूप राजनीति से प्रेरित न होकर विश्व बन्धुत्व, प्रेम और भ्रातृत्व से पूरित है।

7. आत्म–शिक्षण करके सीखना :

स्काउट आन्दोलन का उद्देश्य नवयुवकों की भौतिक, शारीरिक, बौद्धिक, सामाजिक, आध्यात्मिक और सदाचार सम्बन्धी उन्नति करना तथा उसे सुनागरिकता से सुदृढ़ धरातल पर आसीन करना ताकि वह इस विश्व मैत्री संगठन का सही सदस्य होने का दावा कर सके। स्काउटिंग आत्मशिक्षण का अवसर प्रदान करते हुए प्रत्येक कार्य को अपने हाथ से करके सीखने का अवसर देती है। इसीलिए स्काउट/गाइड जीवन यात्रा को सफल ढंग से पूर्ण कर लेते हैं।

8. दूसरों की सेवा :

बाढ़ नियन्त्रण, बाढ़ पीडितों की सहायता, अकाल पीड़ितों की सहायता, प्राथमिक उपचार, अस्पताल में मरीज सेवा, प्रौढ़ शिक्षा, उत्सवों–मेलों, सम्मेलनों, समारोहों में सेवा आदि ईश्वर के प्रति अपना कर्तव्य समझकर स्काउट करता है वही 'सेवा' है और इस प्रकार मानव की मानवता के प्रति सही दिल से की गई सेवा ही सच्ची सेवा है।

9. किशोरों और युवावर्ग का उत्तरदायी नागरिक बनाने का अनुपम कार्यक्रम (जिसका आधार है पेट्रोल (टोली) और ग्रुप (दल) पद्धति, क्रमिक प्रशिक्षण दक्षता के बैज और खुली हवा व बाहरी जीवन की प्रवृत्तियाँ।

स्काउट प्रशिक्षण विकासशील और खुली हवा में जीवन व्यतीत कर जीवन–यात्रा के प्रति अपने आपको प्रस्तुत या अग्रसर करना है। प्रारंभिक अवस्था में प्रशिक्षण का स्तर प्राप्ता की दृष्टि से बनाया गया है। किशोर अपना ''भरसक प्रयत्न'' करता है ताकि प्रशिक्षण में अग्रणी रहे। किन्तु ज्योंही स्काउट प्रशिक्षण पूर्ण करता है और ''तैयार रहो'' के मानसपटल पर भाव जाग्रत होते है। अन्ततोगत्वा 'सेवा' का पथ अग्रसर होता है जो स्काउट आन्दोलन का चरम बिन्दु है। यहीं से स्काउट प्राप्ता की अपेक्षा देने वाला या दाता; सेवा देने वाला बन जाता है तथा समाजोपयोगी कार्यों में जुट जाता है।

स्काउटिंग में पेट्रोल पद्धति/दल पद्धति में व्यक्तित्व का विकास, भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास ही नहीं होता है वरन् वह समूह में रहना, कार्य करना, एक–दूसरे की भावनाओं का आदर करना, एक–दूसरे के दुख–दर्द को समझना और आपसी मेल–जोल की भी सतत प्रवाहिनी सरिता का प्रवाह प्राप्त होता है जो जीवन यात्रा को सफल बनाने, प्रसन्न जीवन जीने, और सेवा कार्य को लगन से करने हेतु प्रेरित होता है।

इन उपरोक्त मूलभूत सिद्धान्तों पर आधारित स्काउट आन्दोलन विश्वमैत्री, विश्वबन्धुत्व पर आधारित सेवाभावी संस्था है।

राज्य स्तरीय साहसिक गतिविधि प्रशिक्षण केन्द्र

प्रकृति के मध्य खुले में जीवन, साहसिक, रोमांचकारी एवं चुनौतीपूर्ण गतिविधियाँ युवाओं को आकर्षित करती हैं। इन जीवनोपयोगी एवं आनन्ददायक गतिविधियों का रसास्वादन स्काउट-गाइड, रोवर-रेंजर तो भरपूर करते हैं परन्तु अनेक युवा स्काउटिंग/गाइडिंग से सम्बद्ध न होने की दशा में स्वयं को वंचित समझते हैं।

साहसिक रोमांचकारी गतिविधियों में सामान्य युवाओं की सहभागिता करवाने के उद्देश्य से आबू पर्वत पर स्टेट एडवेंचर इन्स्टीट्यूट संचालित किया जा रहा है, जिसमें स्काउट-गाइड, रोवर-रेंजर के अतिरिक्त सामान्य विद्यार्थियों को भी भाग लेने का अवसर दिया जाता है। कैंम्पिंग, ट्रेकिंग, नाइट हाइकिंग, ऑब्स्ट्रिकल एडवेंचर, रॉक क्लाइम्बिंग, रोप एडवेंचर, बोटिंग, राइडिंग आदि साहसिक अभ्यास युवाओं द्वारा अत्यधिक पसन्द किये जाते हैं। इस इन्स्टीट्यूट ने अपने अनूठे कार्यक्रमों के कारण लोकप्रियता हासिल कर ली है और इसी क्रम में प्रदेश संगठन द्वारा प्रशिक्षण केन्द्र पुष्करघाटी अजमेर तथा जोधपुर स्थित प्रशिक्षण केन्द्र चौपासनी में एडवेंचर इन्स्टीट्यूट प्रारम्भ किये गये हैं। प्रत्येक वर्ष राज्य के विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से हजारों विद्यार्थियों ने एडवेंचर केन्द्र आबू पर्वत, एडवेंचर केन्द्र पुष्कर घाटी अजमेर में तथा चौपासनी, जोधपुर जिले में एडवेंचर शिविरों का आनन्द उठाते हैं। राजस्थान की विशिष्ट भौगोलिक संरचना अनेकानेक रोमांचकारी गतिविधियों को आमंत्रित करती है।

संगठन की यह मान्यता है कि अधिकाधिक युवाओं को स्काउटिंग-गाइडिंग जीवन पद्धति एवं साहसिक व रोमांचकारी गतिविधियों से जुड़ने का अवसर प्राप्त हो और इसी ध्येय को दृष्टिगत रखते हुए उक्त एडवेंचर केन्द्रों का संचालन सफलतापूर्वक किया जा रहा है।

गतिविधि दर्पण

मण्डल, जिला, स्थानीय संघ एवं यूनिट स्तर पर की गई गतिविधियों, शिविरों, रैलियों इत्यादि का संक्षिप्त विवरण

भरतपुर मण्डल

❖ भारत स्काउट व गाइड, मंडल मुख्यालय, भरतपुर पर रोवर लीडर, रेंजर लीडर, स्काउट मास्टर, गाइड कैप्टन, कब

मास्टर, फ्लॉक लीडर बेसिक शिविरों का आयोजन किया गया। शिविर में सभी संभागियों को प्रशिक्षकों द्वारा पाठ्यक्रमानुसार विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण प्रदान किए गए।

❖ धौलपुर जिले में राज्य सरकार के 2 वर्ष पूर्ण होने पर सड़क सुरक्षा मैराथन दिनांक 13.12.2025 को मेला ग्राउंड से मचकुंड तक आयोजित की गई। मैराथन में जिला कलक्टर धौलपुर,

डीजे धौलपुर, एसपी धौलपुर, डीटीओ धौलपुर द्वारा दिए गए निर्देशों की पालना करते हुए इस कार्यक्रम में डीएलएड की छात्राओं ने बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। मैराथन में गाइड शिविर में भाग ले रही काजल मीणा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

बीकानेर मण्डल

❖ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, झुंझुनू के तत्वावधान में आयोजित पांच दिवसीय अनुसूचित जाति अनुसूचित जनजाति वार्षिक ग्रुप शिविर का मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार शर्मा ने आकस्मिक विजिट किया। इस अवसर पर उपस्थित स्काउट्स गाइड्स को संबोधित करते हुए मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने कहा कि मेहनत ही सफलता की कुंजी है, अतः अपने जीवन में अनुशासन बनाए हुए निरंतर आगे बढ़े। जहां अवसर मिले उसको भुनाते हुए सुयोग्य नागरिकता के गुण विकसित करें। स्काउट गाइड के माध्यम से बालक बालिकाओं के व्यक्तित्व का विकास किया जाता है। इस दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में सहायक निदेशक शिक्षा विभाग अशोक जांगिड़ ने संबोधित करते हुए कहा कि अनुशासन ही जीवन का आधार है, स्काउट गाइड के माध्यम से बालक

बालिकाओं को व्यावहारिक ज्ञान कराया जाता है, जिससे वह भविष्य जीवन हेतु अच्छे नागरिक बनते हैं। इस अवसर पर एससी एसटी स्काउट गाइड्स को यूनिफॉर्म वितरित की। सी. ओ. स्काउट महेश कालावत ने बताया कि इस अवसर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी अशोक कुमार शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक शिक्षा राजेश मील, सहायक निदेशक शिक्षा अशोक जांगिड़ के सान्निध्य में जिले के 130 उपस्थित अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के स्काउट गाइड को यूनिफार्म वितरित की गई। शिक्षा अधिकारियों ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि राज्य सरकार गरीब तबके के विद्यार्थियों को स्काउट गाइड से जोड़ने हेतु आर्थिक सहायता एवं संबलन प्रदान करती है, इस हेतु स्काउट गाइड राज्य मुख्यालय जयपुर का आभार प्रकट किया गया। इस अवसर पर स्काउट परंपरा के अनुसार अतिथियों का स्वागत अभिनंदन किया गया तथा सी.ओ. गाइड प्रियंका खीचड़ ने सभी का आभार प्रकट कर धन्यवाद ज्ञापित किया। रामदेव सिंह गढ़वाल, महेश कुमार, विजेता कुमारी नेहरा, मनीषा सैनी, दिनेश कुमार, अमरचंद आदि उपस्थित रहे।

❖ झुंझुनू जिले के स्थानीय संघ खेतड़ी का वार्षिक अधिवेशन 09 दिसंबर को विनोदिनी पी.जी. कॉलेज कॅंपस राजोता खेतड़ी में

मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं प्रभारी कमिश्नर श्रीमती अनुकंपा जी अराडावतिया (एडवांस ट्रेंड कमिश्नर) की अध्यक्षता एवं सी.ओ. स्काउट महेश कालावत तथा स्थानीय संघ प्रधान श्री अशोक सिंह शेखावत के आतिथ्य में समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। अधिवेशन के दौरान उत्कृष्ट कार्य करने वाले अधिकारियों, स्काउटर, गाइडर का सम्मान किया। समारोह में 165 संस्था प्रधान, स्काउटर गाइडर उपस्थित रहे।

जयपुर मण्डल

- भारत स्काउट व गाइड, मंडल मुख्यालय, जयपुर के तत्वावधान में दिनांक 16 दिसंबर से 22 दिसंबर 2025 तक गाइड कैप्टन एडवांस कोर्स एवं रेंजर लीडर बेसिक कोर्स का आयोजन मंडल मुख्यालय बनीपार्क, जयपुर पर किया गया।

गाइट कैप्टन एडवांस्ड कोर्स में 17 गाइडर एवं रेंजर लीडर बेसिक कोर्स में 9 गाइडर्स ने सहभागिता कर प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर में दक्ष प्रशिक्षकों द्वारा संभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया यथा प्रवेश की संपूर्ण जानकारी, प्राथमिक चिकित्सा, पायनियरिंग, ऐस्टीमेशन, दिशा ज्ञान, नक्शा पढ़ना, सभी सोपनों के दक्षता बैजों की जानकारी, संगठन की संपूर्ण जानकारी इत्यादि पर प्रशिक्षण दिया गया। संभागियों को प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक रूप से प्रशिक्षण प्रदान किया गया। शिविर का संचालन श्रीमती बसंती शर्मा एएलटी गाइड ने गाइड कैप्टन एडवांस कोर्स व सुश्री निर्मला माथुर ने रेंजर लीडर बेसिक कोर्स का संचालन किया। श्रीमती इंदू तंवर ने उक्त तिथियों में मंडल मुख्यालय बनीपार्क पर डीएलएड गाइड का, श्रीमती सुशीला उपाध्याय, श्रीमती मीनाक्षी शर्मा, दक्षा, दिव्या पारिक इत्यादि ने शिविर संचालन में पूर्ण सहयोग दिया। उक्त तिथियां में ही बनीपार्क जयपुर पर डीएलएड गाइड का शिविर आयोजित किया गया, जिसमें 165 संभागियों ने शिरकत की। शिविर का संचालन श्रीमती परमेश्वरी चारण एएलटी गाइड ने किया। मुस्कान, ममता बेनीवाल इत्यादि ने शिविर संचालन में सहयोग प्रदान किया। सहायक राज्य संगठन आयुक्त (गाइड) नीता शर्मा के मार्गदर्शन में उक्त शिविर सफलतापूर्वक संचालित हुए।

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, सीकर के तत्वावधान में जिला मुख्यालय बड़ा तालाब सीकर पर जिला स्तरीय राज्य पुरस्कार स्काउट अभिशंषा शिविर आयोजित किया गया। शिविर में स्थानीय संघ शिवसिंहपुरा, अजीतगढ़, लक्ष्मणगढ़, धोद, सीकर के स्काउट ने सहभागिता की। स्टाफ सदस्य के

रूप में शिविर संचालक बसंत कुमार लाटा सी.ओ. स्काउट, पवन कुमार शर्मा सचिव पलसाना, सुनील लांबा, लखन बावरिया ने सहयोग प्रदान किया। इस अवसर पर स्काउट की विभिन्न प्रकार की जांच की गई। मुख्य रूप से नियम, प्रतिज्ञा, ध्वज गीत, प्रार्थना, झंडा गीत, राष्ट्रगान, प्राथमिक सहायता, गांठे, लेसिंग, शिविर लीडरशिप, विभिन्न ध्वजों व दक्षताओं की जानकारी, विभिन्न दक्षता बैज, सामुदायिक सेवा, समाज सेवा इत्यादि की जांच की गई।

- भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, शिवसिंहपुरा, जिला सीकर की कार्यकारिणी बैठक का आयोजन 12 दिसंबर 2025 को डाइट सीकर में श्रीमती दुर्गा प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर गाइड एवं मुख्य ब्लॉक शिक्षा अधिकारी पिपराली सीकर की अध्यक्षता में किया गया। नवनियुक्त प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर स्काउट श्री राजेंद्र प्रसाद मील व किरण सैनी प्राचार्य डाइट के सान्निध्य एवं उपस्थिति में कार्यकारिणी बैठक

का आयोजन किया गया। नव नियुक्त प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर स्काउट व गाइड का कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा स्कार्फ पहनाकर सम्मान एवं स्वागत किया गया। बैठक में उपस्थित कार्यकारिणी के सदस्यों द्वारा सर्व सम्मति से संगठन की सक्रिय प्रगति, निष्क्रिय ग्रुपों को सक्रिय करना, कोटामनी स्टीकर राशि, उद्योग पर्व राशि एकत्र कर जमा करवाना, पंजीकृत ग्रुपों का निरीक्षण कर दिशा निर्देश प्रदान करना, अपंजीकृत ग्रुपों का पंजीकरण करना, वार्षिक शिविरों व जांच शिविर शीघ्र आयोजित कर स्काउट, गाइड, रोवर, रेंजर, कब, बुलबुल की योग्यता अभिवृद्धि करने का प्रस्ताव लेने के साथ–साथ सर्व सम्मति से वार्षिक अधिवेशन के प्रस्तावों का अनुमोदन किया गया। स्थानीय संघ के प्रति सक्रियता एवं कार्य शैली को देखते हुए स्थानीय संघ के नियुक्त पदाधिकारियो को यथावत रखे जाने का सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया एवं वार्षिक अधिवेशन के प्रस्तावों का सर्व सम्मति से अनुमोदन किया गया।

❖ भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, दौसा के तत्वावधान में 11 दिसम्बर को स्काउटर गाइडर अभिनवन शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ करते हुए जिला अध्यक्ष सुशील कुमार शर्मा ने कहा कि स्काउट सेवा का पर्याय

होता है। जो व्यक्ति सेवा कार्य से जुड़ा होता है, वह तन और मन दोनों से स्वस्थ रहता है। उन्होंने कहा कि जो स्काउट मास्टर सक्रिय होकर बच्चों के साथ जुड़ा रहता है उसका संस्था प्रधान भी पूरा सहयोग करते हैं। सी.ओ. स्काउट प्रदीप सिंह ने बताया कि राजस्थान में स्काउटिंग गतिविधियों में दौसा जिले का नाम अग्रणी जिलों में गिना जाने लगा है। सचिव ओम प्रकाश शर्मा ने बताया कि आगामी 15 से 19 दिसंबर तक द्वितीय एवं तृतीय सोपान स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है। जिसमें सभी विद्यालयों से अधिक से अधिक संख्या में स्काउट गाइड को सहभागिता करेंगे। जिससे उनकी योग्यता वृद्धि हो सके। तृतीय सोपान उत्तीर्ण, राज्य पुरस्कार और राष्ट्रपति पुरस्कार स्काउट गाइड को विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया जाता है। सी.ओ. गाइड निरमा मीना ने गाइडिंग को सक्रिय करने के लिए कहा। विद्यालय में आने वाली समस्याओं तथा शंकाओं का समाधान किया गया। गोविंद नारायण तिवाड़ी, रामबाबू शर्मा, वाजिद मोहम्मद, बनवारी लाल शर्मा ने स्काउटिंग के नियम, रिकॉर्ड संधारण, बच्चों की प्रवेश प्रक्रिया, योग्यता वृद्धि के बारे में विस्तार से बताया। इस अवसर पर ममता रानी वर्मा, कल्पना शर्मा, तारावती, रामकेश मीना, महेंद्र जांगिड़, कविता मीना, वंदना मीना, गोविंद खंडेलवाल, भगवती बंशीवाल, नंद किशोर शर्मा, पूनम राठौड़, नेहा लक्षकार, हिमानी बाली, विनोद सैनी, सूबे सिंह गुर्जर ने संबोधित किया।

❖ लालसोट में माननीय राज्यपाल महोदय के कार्यक्रम में स्थानीय संघ लालसोट के स्काउट्स गाइड्स रोवर रेंजर ने विशेष भूमिका निभाई। स्काउट्स ने विभिन्न स्थानों पर अनेक प्रकार की सेवाएं दी। इस दौरान विधायक श्री रामबिलास मीना और नगर की सभापति पिंकी चतुर्वेदी ने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रांत प्रचारक श्री कैलाश जी, सह प्रांत प्रचारक श्री रमेश पारीक के समक्ष भारत स्काउट्स गाइड्स के सेवा कार्यों के

बारे में मुक्त कंठ से प्रशंसा की। इस दौरान प्रांत प्रचारक ने स्काउट्स गाइड्स को भारती भवन में आमंत्रित भी किया। उन्होंने गाइड्स बालिकाओं के आग्रह पर फोटो भी खिंचवाया और कहा कि आप लोग बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। इसी प्रकार राष्ट्र निर्माण में कार्य करते रहे। यूथ समिति के जिला अध्यक्ष श्री हर्ष शर्मा राजभवन के सभी कर्मचारियों के चहते बने

रहे। उन्होंने कहा आप लोग ने बहुत व्यवस्थित कार्य किया है। इस दौरान उनकी राज्यपाल महोदय से भी मुलाकात करवाई गई। जिला कलक्टर, पुलिस अधीक्षक, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक, लालसोट एसडीएम, रामगढ़ पचवारा एसडीएम, नांगल राजावतान एसडीएम, राजगढ़ उप पुलिस अधीक्षक, लालसोट उप पुलिस अधीक्षक, दौसा पुलिस उपाधीक्षक के साथ भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों ने भारत स्काउट्स गाइड्स के सेवाभावी और कर्मठ वॉलंटियर्स का सम्मान किया।

जोधपुर मण्डल

❖ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, सिरोही द्वारा आयोजित जिला स्तरीय राज्य पुरस्कार स्काउट गाइड अभिशंसा शिविर 19 दिसम्बर को उप निदेशक सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग सिरोही राजेंद्र कुमार राजपुरोहित के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। इस अवसर पर राजेंद्र कुमार राजपुरोहित ने कहा कि स्काउट गाइड सेवाभावी, धैर्यवान, ऊर्जावान, समय के प्रति लगन, कर्तव्यनिष्ठ होते हैं।

इस राज्य पुरस्कार में सम्मिलित हुए सभी स्काउट गाइड को बधाई दी। प्रारम्भ में सी.ओ. स्काउट एम.आर. वर्मा ने शिविर का प्रतिवेदन प्रस्तुत कर कहा कि राज्य पुरस्कार अभिशंसा शिविर में उत्तीर्ण होने वाले स्काउट गाइड को राज्य स्तरीय राज्यपाल अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि इस शिविर में जिले से 90 स्काउट और 31 गाइड ने भाग लिया है। प्रातःकालीन सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। गाइड विभाग शिविर का संचालन संचालिका श्रीमती शकुन्तला पांडे लीडर ट्रेनर गाइड जोधपुर ने किया और उन्होंने कहा कि सिरोही जिले में स्काउट गाइड ट्रेनिंग सेंटर पर बहुत अच्छी सुविधाएँ की गई है। देवेंद्र कुमार गर्ग स्थानीय संघ सिरोही के पूर्व सचिव ने कहा कि स्काउट गाइड का 5वाँ नियम है स्काउट गाइड पशु पक्षियों का मित्र और प्रकृति प्रेमी होता है जिसके लिए हमेशा पर्यावरण को बढ़ावा दिया जाता है। राजेंद्र कुमार राजपुरोहित ने उपस्थित स्काउट गाइड को नशा न करने की शपथ दिलायी और सामाजिक न्याय व अधिकारिता विभाग द्वारा जिले में संचालित विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी। शिविर में बाबूलाल सैनी, लाजमत विश्नोई, तोला राम फाचरिया, जिगर एस बोरेसा, दिगंबर सिंह चौधरी, श्रीमति यशवंत वर्मा, दृष्टि पांडे, रवीना राणा, मोहित अग्रवाल, जितेंद्र कुमार, किशोर कुमार, विशाल कुमार माली आदि ने सेवाएँ दी।

❖ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, सिरोही द्वारा आयोजित जिला स्तरीय निपुण रोवर रेंजर प्रशिक्षण शिविर का 19 दिसम्बर को हँसमुख चौहान प्रधान पंचायत समिति सिरोही ने अवलोकन किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि मैंने भी बाल्यकाल में आठवीं कक्षा तक स्काउट गाइड में रह कर कई शिविरों में भाग लिया है। स्काउट गाइड प्रेरणा दायी और सेवाभावी संगठन है। अभी स्काउट गाइड के लिए जिला मुख्यालय पर भामाशाहों द्वारा जो व्यवस्था की गई है यह बहुत ही सराहनीय कार्य है। स्काउट गाइड शिविरों में सर्दी में गर्म पानी की सुविधा मिल सके इसके लिए उन्होंने दो गीजर लगवाने का आश्वासन दिया सी.ओ. स्काउट एम.आर. वर्मा ने

अतिथियों का स्वागत करते हुए कब बुलबुल स्काउट गाइड और रोवर रेंजर की गतिविधियों से अवगत कराया और स्काउट गाइड जिला मुख्यालय द्वारा अतिथियों का स्कार्फ मोमेंटो भेंट कर स्वागत किया एवं जिला मुख्यालय पर हुए विकास कार्यों का अतिथियों को अवलोकन कराया गया। वर्मा ने बताया कि प्रातः शिविर में उपस्थित स्काउट गाइड रोवर रेंजर को योगा का प्रशिक्षण गणपतसिंह देवड़ा एवं भीक सिंह भाटी ने दिया। इस अवसर पर गणपतसिंह देवड़ा, पूर्व जिला शिक्षा अधिकारी चिराग रावल, नगर अध्यक्ष राजेंद्र सिंह, नगर उपाध्यक्ष कैलाश परमार, नगर महामंत्री तोला राम फाचरिया, हर चरण पुरोहित, श्रीमति शर्मिला डाबी, सोनिया कुमारी, रवीना कुमारी राणा, ललिता कुमारी, दृष्टि पांडे, मोहित अग्रवाल, रोहित कुमार आदि उपस्थित रहे।

❖ जोधपुर स्थित केरू शिक्षण संस्थान द्वारा संचालित रूपाराम सेवदा महाविद्यालय में 21 दिसंबर को होम बेस्ट प्लेटीव केयर

प्रोजेक्ट एम्स जोधपुर द्वारा संचालित कार्यक्रम के तहत अनुग्रह केयर गिविंग सोसाइटी, हास्पाइस एंड पालिटीव केयर नर्सेज एसोसिएशन एवं सिपला फाऊंडेशन द्वारा स्थानीय महाविद्यालय में निःशुल्क स्वास्थ्य जांच एवं कैंसर जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। संस्थान के निदेशक हनुमान राम चौधरी व महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. पूनम चौधरी ने बताया कि यह आयोजन ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों के लिए वरदान साबित होगा। शिविर में लोगों की निःशुल्क जांच के साथ ही कैंसर के लक्षण व सुरक्षा उपायो से लोगों को आगाह किया गया। शिविर में ग्रामीण इलाकों से 300 मरीजों ने पहुंचकर लाभ उठाया। स्काउट यूनिट लीडर राजकुमार जोशी ने बताया कि इस अवसर पर स्काउट गाइड, रोवर रेंजर भी 'हम तैयार हैं' की तर्ज पर समाज सेवा के लिए तत्पर दिखे। स्काउट गाइड ने मरीजो का रजिस्ट्रेशन व जलपान व्यवस्था में सहयोग किया। इसके लिए विद्यालय के 50 स्काउट गाइड को अलग–अलग कार्य बांटे गए, जिससे कैंप में पहुंचने वाले सभी मरीजों और उनके साथ आने वालों को असुविधा न हो। स्काउट गाइड ने घर घर संपर्क कर अधिक से अधिक मरीजों को जागरुक कर कैंप में लाभ दिलाने का कार्य किया। स्काउट गाइड ने बुजुर्गों को गोद में उठाकर और हाथ पकड़ कर सहारा दिया जिस पर ग्रामीणों ने स्काउट गाइड के सेवा कार्य की प्रशंसा की। डॉ. सुमन चौधरी ने संस्थान की प्रशंसा करते हुए ग्रामीणों के इस शिविर में अधिक से अधिक भाग लेने पर खुशी जाहिर करते हुए आगे भी इस प्रकार के कैंप आयोजित करने का आह्वान किया।

❖ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, पाली के तत्वावधान में राज्य पुरस्कार स्काउट गाइड जाँच शिविर, निपुण रोवर रेंजर प्रशिक्षण शिविर एवं अनुसूचित जाति–जनजाति स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 10 से 14 दिसंबर 2025 तक जिला प्रशिक्षण केंद्र बजरंग बाड़ी पाली में किया गया। शिविर के तृतीय दिवस 12 दिसम्बर को प्रभारी मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने शिविर में सहभागिता कर रहे अनुसूचित जाति–जनजाति के 130 स्काउट गाइड को गणवेश वितरीत की। सी.ओ. स्काउट गोविन्द मीना ने बताया कि प्रभारी मंत्री ने स्काउट गाइड को आमजन को सड़क सुरक्षा जागरूकता के प्रचार प्रसार करने और ट्रेफिक नियमों का पालन करने का आह्वान किया। प्रभारी मंत्री ने राष्ट्रपति अवार्ड प्राप्त करने वाले रोवर विशाल का सम्मान किया एवं 19वीं राष्ट्रीय स्काउट जंबूरी में राजस्थान प्रदेश का प्रतिनिधित्व कर राष्ट्रीय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले जिले के चंद्राज पब्लिक स्कूल सोजत रोड के स्काउट बैंड द्वारा उत्कर्ष प्रदर्शन करने पर प्रधानाचार्य आलोक शर्मा का सम्मान किया गया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष स्काउट गाइड पाली श्री महेंद्र बोहरा, जिला कलक्टर पाली लक्ष्मी नारायण मंत्री, पुलिस अधीक्षक पाली आदर्श संधू, अतिरिक्त जिला कलक्टर बजरंग सिंह चौहान, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक विपिन शर्मा, आयुक्त नगर निगम पाली नवीन भारद्वाज, समाजसेवी त्रिलोक चौधरी, सी.ओ. गाइड डिंपल दवे, आरटीओ पाली ओ.पी. बैरवा, जिला परिवहन अधिकारी पाली विजय सिंह मीणा और अन्य समस्त जिला स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे। कार्यकम का संचालन प्रधानाचार्य हितेश रामावत ने किया। शिविर में पुरुषोत्तम पुरी गोस्वामी, मोहन सिंह, दौलत सिंह, जयपाल सिंह, उर्मिला यति, रमेश सोलंकी, कैलाश कुमार, भगवान सिंह आदि द्वारा सेवाएं दी गई।

कोटा मण्डल

❖ भारत स्काउट व गाइड, कोटा जिला के तत्वावधान में गणेश नगर स्थित बंसल पब्लिक स्कूल के स्काउट्स ने मानवाधिकार दिवस के अवसर पर रैली निकाल कर आमजन को उनके

अधिकारों के बारे में बताया। सी.ओ. स्काउट बृज सुंदर मीणा ने बताया कि भारत स्काउट गाइड, राष्ट्रीय मुख्यालय नई दिल्ली के निर्देशानुसार मानवाधिकार दिवस जो कि प्रतिवर्ष 10 दिसंबर को मनाया जाता है, के अवसर पर कोटा के बंसल स्कूल के स्काउट्स ने एक जागरूकता रैली का आयोजन किया, जिसे स्कूल मैनेजर अनुराग हाड़ा व प्राचार्या सविता त्रिपाठी ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। स्काउट्स ने उत्साहपूर्ण भागीदारी की, आसपास की कॉलोनियों में रैली निकाली, रैली में हाथों में तख्तियाँ लिए और प्रेरक नारे लगाते हुए मानवाधिकार आयोग द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में कॉलोनी निवासी आमजन को बताते हुए उन योजनाओं का लाभ लेने हेतु प्रेरित किया। साथ ही समाज में फैली भेदभाव जैसी कुरीतियों को समाप्त करने के के बारे में जागरूकता पैदा की। इस रैली में स्काउट्स के साथ स्काउट मास्टर शिव सहाय शर्मा, शिल्पी सोलोमन, महेन्द्र कुमार वर्मा, तरुण गौतम सहित स्कूल स्टाफ ने भी भाग लिया। सहायक राज्य संगठन आयुक्त दिलीप कुमार माथुर ने इस सफल आयोजन पर सभी को बधाइयां दी।

उदयपुर मण्डल

❖ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, प्रतापगढ़ के तत्वावधान में 12 दिसम्बर से 18 दिसम्बर तक आयोजित स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर के अंतिम दिवस पर संभागियों

द्वारा सड़क सुरक्षा रैली का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला परिवहन निरीक्षक दूर्गाशंकर जाट एवं ट्रेफिक इंचार्ज ईश्वरलाल मीणा द्वारा सडक सुरक्षा कार्यशाला का आयोजन किया गया। सड़क सुरक्षा नियमों के पालन करने की शपथ दिलाई। जिला परिवहन निरीक्षक दूर्गाशंकर जाट एवं सी.ओ. गाइड रेखा शर्मा ने सड़क सुरक्षा रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। सी.ओ. गाइड रेखा शर्मा ने बताया की प्रत्येक विद्यालयों से 108 पुरूष अध्यापक व 80 महिला अध्यापिका ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण दल में शिविर संचालक फ्लॉक लीडर बृजरानी माथुर, गाइड केप्टन लीडर उमा वर्मा, स्काउट संचालक राकेश टांक, कब संचालक राजेन्द्र चौधरी ने प्रशिक्षण दिया। इस अवसर पर स्काउटर मानसिह देवडा, भीमराज मीणा, श्याम पुरोहित, अधिराज सिह देवल, मनीष कुमार पाटीदार, बादल बारोलिया, सुनिल टेलर, संजय कुमावत, विनोद कुमावत, अजीत सिंह चुण्डावत गर्वित द्विवेदी, कैलाश मालवीय, गाइडर साधना बलाई, चन्दा मीणा, मन्जुलता मीणा, कुसुम पाटीदार, ज्योतिपुरी गोस्वामी, दुर्गा कुमारी मीणा, रोवर लीडर अजय मेघवाल, गौरव रैदास, आयुष सुथार, अंकित रैदास, भुपेन्द्र सिंह, लखन रैदास, रेंजर लीडर पूर्णिमा राजपुत, रोशनी सुथार, अंजली राठौर, भुवनेश्वरी राठौर, लक्ष्मी कुमावत ने सेवाएं दी।

❖ राजसमन्द में भारत स्काउट व गाइड का तृतीय सोपान प्रशिक्षण एवं जांच शिविर का शुभारम्भ गणमान्य अतिथियों के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। राजसमन्द के सी.ओ. स्काउट सुनील कुमार सोनी ने बताया की स्थानीय संघ और जिला मुख्यालय के सान्निध्य में ब्लॉक राजसमन्द का शिविर पंचायत समिति राजसमन्द के प्रधान सुरेश चन्द्र कुमावत, ग्राम पंचायत एमडी के उप सरपंच मांगीलाल कुमावत एवं पंचायत शिक्षा अधिकारी भानु कुमार वैष्णव के आतिथ्य में शुरु हुआ। अतिथि महानुभावों ने ध्वजारोहण कर शविर का विधिवत शुभारम्भ किया। प्रार्थना व झण्डा गीत के साथ स्काउट गाइड ने ध्वज को सैल्यूट किया। स्थानीय संघ सचिव धर्मेन्द्र गुर्जर अनोखा ने बताया की राजसमन्द के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय एमडी, राज्यावास, कुंवारिया, सी.बी.ए. स्कूल मजा, और एल.पी.एस. स्कूल, सनराईज एकेडमी नाथद्वारा, खटामला, मियाला, देवपुरा, बालिका कांकरोली, बालिका एमडी, डिवाइन पब्लिक स्कूल राजसमन्द, लसानी के 156 स्काउट व गाइड ने भाग लिया। सहायक शिविर संचालक रोशन लाल रेगर ने बताया की शिविर संचालक दल में श्याम सिंह चौहान, सचिव देवगढ़ नारायण लाल कलाल, सर्वेश्वर बरडवाल, राजकुमार त्रिपाठी, तोषित चौहान, मीना शर्मा, पार्वती माली, रंजना कुमावत, सीमा

कुमावत, निशा जांगीड, श्यामा कुंवर चौहान, ललित पालीवाल ने अपनी सेवाएँ प्रदान की। अनोखा ने बताया की शिविर में प्रथम सोपान से तृतीय सोपान तक का प्रशिक्षण दिया गया। इस अवसर पर पंचायत शिक्षा अधिकारी भानु कुमार वैष्णव ने स्काउट गाइड को सम्बोधित करते हुए कहा कि स्काउट गाइड सच्ची निष्ठा, समर्पण व त्याग की भावना से कार्य करते हैं जिससे अनुशासित व सुनागरिक तैयार होते हैं।

❖ द विजन एकेडमी स्कूल ए यूनिट ऑफ 'आरएमवी' उदयपुर के स्काउट गाइड ने नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति देते हुए आमजन के समक्ष 'मतदान करना जरूरी है' का रोचक प्रदर्शन किया। डॉ प्रतिमा सामर विद्यालय की प्राचार्य के निर्देश व गाइडेंस में

उदयपुर के गणगौर घाट पर यह नुक्कड़ नाटक आयोजित किया गया। नाटक का निर्देशन रिजवान सर द्वारा किया गया तथा गाइडर शिप्रा चतुर्वेदी एवं स्काउटर उमेश चंद्र पुरोहित ने सहयोग दिया।

❖ उदयपुर के जिला शिक्षा अधिकारी एवं जिला कलक्टर महोदय के निर्देशानुसार भारत स्काउट व गाइड उदयपुर के तत्वावधान में द विजन एकेडमी स्कूल के स्काउट गाइड ने नगर निगम से लोह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की 150वीं जयंती पर पदयात्रा रैली निकाली गई। रैली बापू बाजार, सूरजपोल, जिनी रेत, दिल्ली गेट होते हुए नगर निगम पर समाप्त हुई। इस रैल में कई गणमान्य प्रशासनिक अधिकारी

उपस्थित रहे। गाइड सी.ओ. अभिलाष मिश्रा एवं सी.ओ. सुरेंद्र कुमार पांडे ने रैली का संचालन किया। सांसद श्रीमान मन्ना लाल जी रावत ने हरी झंडी दिखाकर रैली को रवाना किया। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रतिमा सामर ने बच्चों को अधिक से अधिक भाग लेने के लिए प्रेरित किया। स्काउट मास्टर उमेश चंद्र पुरोहित, गाइडर शिप्रा चतुर्वेदी एवं तरुणा शर्मा ने रैली में स्काउट गाइड को भाग दिलवाया।

CELEBRATIONS DAYS : JANUARY-FEBRUARY, 2026

10 January	:	World Hindi Day
12 January	:	National Youth Day
23 January	:	Subhash Chandra Bos Jayanti
24 January	:	National Girl Child Day
25 January	:	National Voters Day
26 January	:	Republic Day
30 January	:	Shahid Diwas (Gandhi ji)
04 February	:	World Cancer Day
07 February	:	Safer Internet Day
20 February	:	World Social Justice Day
21 February	:	International Mother Language Day
22 February	:	Baden Pawell Day & Thinking Day
28 February	:	National Science Day

Plan an activity with your unit on these days and send your success stories & photos to "scoutguidejyoti@gmail.com"

प्रशिक्षण

राष्ट्रीय ध्वज - बनावट व सम्मान

नव प्रविष्ठ स्काउट गाइड के लिए राष्ट्रीय ध्वज की जानकारी पाठ्यक्रम में जांच का प्रावधान

राष्ट्रीय ध्वज

प्रत्येक राष्ट्र का अपना एक झण्डा (ध्वज) होना परमावश्यक एवं गौरवपूर्ण होता है। आरम्भ में तो राष्ट्र अपने लिए एक झण्डे का निर्माण करता है, परन्तु इसके बाद वही झण्डा उस राष्ट्र का निर्माण करता है। हमारे राष्ट्र का भी अपना झण्डा है, जो तिरंगा कहलाता है। इसके वर्तमान रूप तक आने का एक लम्बा और क्रान्तिकारी इतिहास है। लाखों ने इसके लिए अपने प्राणों को न्योछावर किया है, हजारों ने इसके वर्तमान स्वरूप तक आने में महान संघर्ष किया है। वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज 22 जुलाई, 1947 को स्वीकार किया गया था।

यह झण्डा आयताकार 3:2 के अनुपात का तीन रंगों वाली समान चौड़ाई की समानान्तर पट्टियों वाला होता है। सबसे ऊपर का केसरिया रंग साहस और बलिदान का प्रतीक है, बीच का सफेद रंग सच्चाई, पवित्रता और शान्ति का द्योतक है तथा सबसे नीचे वाला हरा रंग हमारे राष्ट्र की सम्पन्नता एवं सम्पदा को प्रदर्शित करता है। सफेद पट्टी के मध्य में नीले रंग में चौबीस 'आरों' वाला 'अशोक चक्र' धर्म और देश की निरन्तर प्रगति दर्शाता है। पूरे राष्ट्रीय ध्वज की नाप 180 X 120 सेंटीमीटर होती है।

फहराना तथा सम्मान

1. राष्ट्रीय ध्वज 15 अगस्त, 26 जनवरी, 2 अक्टूबर तथा अन्य राष्ट्रीय पर्वों या सरकार द्वारा घोषित अवसर पर ही फहराया जाता है।
2. एक स्थान पर कई राष्ट्रों के झण्डे फहराते समय सभी झण्डे बराबर ऊँचाई पर होने चाहिए।
3. अन्य झण्डों के साथ फहराते समय राष्ट्रीय झण्डा अन्य झण्डे या झण्डों के दाँयी ओर तथा उनसे ऊँचा होना चाहिए तथा सर्वप्रथम राष्ट्रीय झण्डे को ही फहराना चाहिए।
4. राष्ट्रीय ध्वज को जमीन से नहीं छूने देना चाहिए।
5. राष्ट्रीय ध्वज के रंग पक्के होने चाहिए। रंग हल्का होने या ध्वज के फट जाने पर उसे तुरन्त बदलना चाहिए।
6. राष्ट्रीय ध्वज को फहराते समय तुरन्त सैल्यूट करना चाहिए। परन्तु उतारते समय सैल्यूट नहीं करते अपितु केवल 'सावधान' खड़े होते हैं।
7. राष्ट्रीय ध्वज लेकर किसी का अभिवादन करना अथवा सिर झुकना या ध्वज को झुकाना वर्जित है।
8. राष्ट्रीय ध्वज को परदे, थैले, पोशाक, विज्ञापन अथवा किसी अन्य सजावट में प्रयोग नहीं करना चाहिए।
9. ध्वज को प्रातः से लेकर सूर्यास्त तक ही फहराना चाहिए।
10. ध्वज को किसी मोटर या अन्य सवारी आदि पर नहीं लगाना चाहिए। केवल कुछ सरकारी अधिकारी ही इसे अपनी कार के रेडिएटर पर लगाने के अधिकारी हैं।
11. सरकारी भवनों पर राष्ट्रीय ध्वज प्रतिदिन फहराया जाता है।
12. राष्ट्रीय शोक के समय शुरू में राष्ट्रीय ध्वज को पहले ऊपर दण्ड (पोल) की ऊँचाई तक ले जाकर फिर दण्ड के थोड़ा नीचे लाकर जिसे हाफ मास्ट कहते हैं, फहराया जाता है।
13. ध्वज फहराते समय केसरिया रंग सबसे ऊपर रहता है।
14. जब ध्वज को पोल में लगाकर ले जाया जा रहा हो तो पोल दाँयें कन्धे पर थोड़ा सा पीछे की ओर तथा ध्वज समेटा हुआ होगा।
15. मार्च पास्ट के समय पोल लम्बवत् रहेगा और ध्वज या तो स्वतंत्र रूप से फहरेगा या 'फ्लाई' के सिरे को दाहिने हाथ से पकड़े रहेंगे। इसे पोल के चारों ओर लपेट कर सुनहरी डोरी से सजावट के साथ बाँधा जा सकता है।
16. राष्ट्रीय ध्वज को फहराते समय शीघ्रता पूर्वक उसे ऊपर चढ़ाना चाहिए तथा उतारते समय धीरे–धीरे उतारना चाहिए।

उक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय ध्वज को फहराना तथा सम्मान करना चाहिए। राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान में ही हमारा सम्मान निहित है तथा इसका अपमान कानूनन अपराध की श्रेणी में आता है।

पर्यटन स्थल

रणकपुर

राजस्थान में अरावली पर्वत की घाटियों के मध्य स्थित रणकपुर में ऋषभदेव का चतुर्मुखी जैन मंदिर जैन धर्म के पाँच प्रमुख तीर्थ स्थलों में से एक है। चारों ओर जंगलों से घिरे इस मंदिर की भव्यता देखते ही बनती है।

वैसे भी राजस्थान अपने भव्य स्मारकों तथा भवनों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें माउण्ट आबू तथा देलवाड़ा के विख्यात जैन मंदिर भी शामिल हैं। रणकपुर मंदिर उदयपुर से 96 किलोमीटर की दूरी पर है। भारत के जैन मंदिरों में संभवतः इसकी इमारत सबसे भव्य तथा विशाल है।

यह इमारत लगभग 40000 वर्ग फीट में फैली है। करीब 600 वर्ष पूर्व 1446 विक्रम संवत् में इस मंदिर का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ था जो 50 वर्षों से भी अधिक समय तक चला। इसके निर्माण में करीब 99 लाख रूपए का खर्च आया था। इन मंदिरों का निर्माण 15वीं शताब्दी में राणा कुंभा के शासनकाल में हुआ था। इन्हीं के नाम पर इस जगह का नाम रणकपुर पड़ा। यहाँ के जैन मंदिर भारतीय स्थापत्य कला का अद्भुत नमूना है। केवल रणकपुर में ही नहीं बल्कि उसके आस–पास की जगहों में भी अनेक प्राचीन मंदिर है। जैन धर्म में आस्था रखने वालों के साथ–साथ वास्तुशिल्प में दिलचस्पी रखने वालों को भी यह जगह बहुत भाती है।

मंदिर में चार कलात्मक प्रवेश द्वार हैं। मंदिर के मुख्य गृह में तीर्थंकर आदिनाथ की संगमरमर से बनी चार विशाल मूर्तियाँ है। करीब 72 इंच ऊँची ये मूर्तियाँ चार अलग दिशाओं की ओर उन्मुख है। इसी कारण इसे चतुर्मुख मंदिर कहा जाता है।

इसके अलावा मंदिर में 76 छोटे गुम्बदनुमा पवित्र स्थान, चार बड़े प्रार्थना कक्ष तथा चार बड़े पूजन स्थल हैं ये मनुष्य को जीवन–मृत्यु की 84 योनियों से मुक्ति प्राप्त कर मोक्ष प्राप्त करने के लिए प्रेरित करते हैं। मंदिर की प्रमुख विशेषता इसके सैकड़ों खम्भे हैं। इनकी संख्या करीब 1444 है। जिस तरफ भी दृष्टि जाती है छोटे–बड़े आकारों के खम्भे दिखाई देते हैं, परन्तु ये खम्भे इस प्रकार बनाए गए हैं कि कहीं से भी देखने पर मुख्य पवित्र स्थल के दर्शन में बाधा नहीं पहुँचती है। इन खम्भों पर सुन्दर नक्काशी की गई है। इनकी खासियत यह है कि ये सभी खम्भे एक–दूसरे से भिन्न हैं। मंदिर के पास के गलियारे में बने मंडपों में सभी 24 तीर्थंकरों की तस्वीरें उकेरी गई है। सभी मंडपों में शिखर हैं और शिखर के ऊपर घंटी लगी है। हवा चलने पर इन घंटियों की आवाज पूरे मंदिर में गूंजती है।

मंदिर के उत्तर में रायन पेड़ स्थित है। इसके अलावा संगमरमर के टुकड़े पर भगवान ऋषभदेव के पद चिह्न भी हैं। ये भगवान ऋषभदेव तथा शत्रुंजय की शिक्षाओं की याद दिलाते हैं।

मंदिर परिसर में नेमीनाथ और

शेष पृष्ठ सं. 25 पर

हमारा स्वास्थ्य

तुलसी

संकलनकर्ता – डॉ. पी.सी. जैन
राज्य सचिव

तुलसी के पौधे प्रायः सभी घरों में पाये जाते हैं। तुलसी परम रोगाणु नाशक पौधा है। इसी वजह से तुलसी का प्रयोग संक्रामक रोगों के फैलने पर अधिकतर किया जाता है।

गुण : तुलसी चरपरी, कड़वी, अग्नि दीपक, हृदय को हितकारी, गरम, दाह, पित्त वृद्धिकर, मूत्रकच्छ, कोढ़, रक्त विकार, कफ पसली पीड़ा, वात नाशक है।

महत्व : तुलसी का तेल क्षय रोग के किटाणुओं से रक्षा करता है। तुलसी से मलेरिया भी ठीक हो जाता है। तुलसी की गंध नथुनों और श्वास की नलिकाओं में संक्रामक रोग के कीटाणुओं को प्रवेश नहीं करने देती है। अनेक होम्योपैथिक दवाएं भी तुलसी से बनती हैं।

सावधानी : तुलसी का उपयोग करने के तुरन्त बाद दूध नहीं पीना चाहिए। उससे कई रोग पैदा हो जाते हैं। अनेक आयुर्वेदिक दवाओं के प्रयोग दूध के साथ बताते हैं। लेकिन तुलसी का प्रयोग हमेशा गंगाजल, चासनी या सादा पानी के साथ ही करना चाहिए।

विशेष : यदि पीने के पानी में तुलसी के पत्ते डाल दिये जायें तो वह पानी समस्त उदर विकारों को नष्ट कर देता है। तुलसी के पौधे आँखों की ज्योति और मन को शांति प्रदान करते हैं। तुलसी के उपयोग से केवल रोगों से ही मुक्ति नहीं बल्कि अपने तन–मन को शांति, शक्ति और ऊर्जावान बनाने के लिए भी तुलसी का प्रयोग करना चाहिए।

गुण धर्म और भेद : सामान्यतः तुलसी के दो भेद होते हैं जिन्हें रामा–श्यामा कहते हैं। रामा के पत्तों का रंग हरा और श्यामा के पत्तों का रंग गहरा सा होता है। गहरे रंग की तुलसी में कफ नाशक गुण अधिक होता है। इसकी गंध व रस में तीक्ष्णता होती है। इसलिए औषधि में इसका प्रयोग अधिक होता है। तुलसी के एक जाति ''वनतुलसी'' है। जिसे कठेरक भी कहते हैं। इसमें गंध कम होती है। रक्त दोष, नेत्र विकार, विष नाशक, प्रसव कालीन रोगों में इसका विशेष उपयोग होता है।

तुलसी के यथा नाम तथा गुण

तुलसी के कई नाम हैं। जो इसके गुणों को दर्शाते हैं। वेदों, औषधि विज्ञान के ग्रंथों और पुराणों में इसके कुछ प्रमुख नाम गुण इस प्रकार है–

कायास्थ	**– क्योंकि यह काया को स्थिर रखती है।**
तीव्रा	**– यह तीव्रता से असर करती है।**
देव दुन्दुभि	**– इसमें देव गुणों का निवास होता है।**
दैत्यागिन	**– रोग रूपी देत्यों का नाश करती है।**
पावनी	**– मन, वाणी और कर्म से पवित्र करती है।**
पूतपत्री	**– इसके पत्र (पत्ते) पूत पवित्र कर्ता हैं।**
सरला	**– हर कोई आसानी से प्राप्त कर लेता है।**
सुभगा	**– महिलाओं के यौनांग पुष्ट बनाती है।**
सुरसा	**– यह ग्रंथियों को सचेतन करती है।**

महात्मय :

1. तुलसी की माला, कंठी, गजरा और करधनी पहनना शरीर को निर्मल रोग मुक्त और सात्विक बनाता है।
2. तुलसी को अंधेरे में तोड़ने से शरीर में विकार आ सकते हैं। क्योंकि अंधकार में इसकी विद्युत लहरें प्रखर हो जाती है।
3. तुलसी का सेवन करने के बाद दूध न पीयें। इससे चर्म रोग होने का डर रहता है।
4. तुलसी खाने के बाद पान न खायें। क्योंकि ये दोनों गर्म हैं परेशानी हो सकती है।
5. सूर्य चन्द्र ग्रहण के दौरान अन्न–सब्जी में तुलसी दल रखने से सौर–मंडल की विनाशक गैसों से खाद्यान्न दूषित नहीं होते हैं।
6. जीरे के स्थान पर पुलाव आदि से तुलसी रस के छींटे देने से महक और पौष्टिकता दोनों बढ़ते हैं।
7. तेजपात की जगह शाक सब्जी आदि में तुलसी दल डालने से मुखड़े पर आभा, आँखों में रोशनी और वाणी में तेजस्विता आती है।
8. तेल, साबुन, क्रीम, उबटन में तुलसी दल और तुलसी रस का उपयोग तन बदन को निरोग, सुवासित और कांतिमय बनाता है।
9. स्वभाव में सात्विकता लाने वाला केवल यही पौधा है।
10. तुलसी केवल शाखा, पत्तों का ढेर नहीं, बल्कि आध्यात्मिकता का प्रतीक है।

वैज्ञानिक विवेचन : ''तुलसी दल में हरे रंग का पीताभ तेल होता है। जो छह सौ फीट घेरे के वायु मंडल में फैलकर मलेरिया और तपैदिक के रोगाणुओं का सफाया कर देता है।''

पेट के रोग

अजीर्ण

कारण : अत्यधिक समय–असमय भोजन करना, भोजन के साथ पानी पीना, दिन में सोना, भय, ईर्ष्या, क्रोध करना।

उपचार : पाँच ग्राम तुलसी के पत्ते और 5 ग्राम काली मिर्च सिल पर

पीसकर और उसे चाटकर भरपेट पानी पी लीजिए।

मंदाग्नि : तुलसी के सूखे पत्ते, भुना जीरा, बेलगिरी, काला नमक दो–दो ग्राम लेकर कूटपीस लें। और 100 ग्राम दही में मिलाकर चाट जाइये। आँव, मरोड़ और ऐंठन शांत हो जायेगी। और आँतों का मल भी निकल जायेगा।

अम्ल–पित्त : तुलसी का बौर, नीम की छाल, छोटी पीपल और काली मिर्च समभाग लेकर चूर्ण बना लें और निराहार सुबह 3 ग्राम चूर्ण ताजा पानी के साथ सेवन करें।

आफरा : तुलसी के पत्तों का रस निकालकर गर्म जल के साथ मिलाकर पी लें। थोड़ी देर में आराम आ जायेगा।

अतिसार : यदि आँव है तो तुलसी की जड़ पीसकर उसमें थोड़ी सी मिश्री या खांड मिलाकर रोगी को पिला दें। इससे मरोड़ और ऐंठन ठीक हो जाते हैं। यही दवा दस्तों में भी दे सकते हैं।

वमन व उल्टी

1. तुलसी के पत्तों का एक चम्मच रस पिलाते ही उल्टी बंद हो जाती है।
2. अगर बुखार भी है और उल्टी भी आ रही है तो 10 ग्राम तुलसी के रस में 10 ग्राम मिश्री डालें। और 25 ग्राम पानी मिलाकर पिला दें।
3. तुलसी दल की चाय बनायें और एक चुटकी पीसी सोंठ डालकर उबाल कर पिला दें।

पेट के कीड़े : तुलसी और अदरक का रस गर्म करके चम्मच भर पिला दें और दो दिन तक तीन–तीन घंटे बाद सेवन करायें। पेट के कीड़े निकल जायेंगे।

पानी की आग– नई जगह यदि पानी रास नहीं आ रहा है तो 5 पत्ते तुलसी के टुकड़े करके पानी में डाल दें। 5–6 मिनट बाद वह पानी रास आने लगेगा।

पीलिया : छाया में सुखाये तुलसी दल 5 ग्राम, और इंद्रजौ 5 ग्राम दोनों को पीस छान कर चूर्ण बनायें। और नमक मिलाकर ताजा पानी के साथ निगल जायें। एक सप्ताह सुबह–शाम आजमा कर देखिये। तुलसी दल ही सर्जन की तरह तिल्ली का ऑपरेशन कर देगा।

जिगर की खराबी– एक गिलास पानी में 10 तुलसी के पत्ते उबालें। उबालकर जब चौथाई रह जाए तो नीचे उतारकर छलनी से छान लें। छने हुए पानी को निरंतर एक सप्ताह तक पीने से जिगर रोग ठीक हो जाता है। भूख लगने लगती है।

बवासीर

उपचार : 1. तुलसी दल पीसकर मस्सों पर लेप करें। इस लेप में कपूर की आधी टिकिया भी शामिल कर लें। मस्से बैठ जाते हैं।

2. तुलसी की जड़ और निंबोली (नीम का फल) की मिंगी खूब बारीक पीस लें। कुल दो ग्राम की मात्रा में छाछ के साथ निगल जायें। बवासीर के कष्ट से निश्चित ही मुक्ति मिल जायेगी।

सिरदर्द

उपचार – 1. तुलसी के पत्ते छाया में सुखाकर पीस लें। इसे सिर दर्द के रोगी को सुंघाने से पीड़ा शांत होती है। तथा पागलपन की उत्तेजना भी ठीक होती है।

2. तुलसी के पत्तों का रस और नींबू का रस समान मात्रा में पीने से सिर दर्द दूर होता है।

3. तुलसी रस की बूँदें नाक में टपकायें।

सिर चकराना

उपचार : वायु अथवा गर्मी के प्रकोप से खून जब पूरे वेग से सिर में चढ़ता है तो चक्कर से आने अनुभव होते हैं। ऐसे में तुलसी रस घोलकर पिला दें। तुरंत आराम आ जायेगा। करीब 20 पत्ते।

मस्तिष्क की गर्मी

कारण : फूलों को नाक के साथ लगाकर सूंघने या नाक में कीड़े पड जाने से ये दिमाग में भी चढ़ जाते हैं।

उपचार : तुलसी की मंजरी (बौर) का चूर्ण बनाकर नसवार की तरह नथुनों से खींचें। दिमागी कीड़ों से छुटकारा मिल जायेगा और नाक से दुर्गंध आना भी बंद हो जायेगी। इससे मिरगी का दौरा भी ठीक हो जाता है।

आँखों के रोग

लक्षण : काले–पीले धब्बे दिखाई देना। रात में बिल्कुल दिखाई नहीं देना।

कारण : अधिक समय धूप में रहना। विटामिन 'ए' की कमी, हरे साग सब्जियों की कमी तथा दूध न सेवन करना।

उपचार : तुलसी रस की एक–एक बूँद आंखों में डालें। हर दो घंटे बाद डालते रहे। काली तुलसी ज्यादा हितकारिणी है।

आँखों की सूजन

तुलसी के पत्तों का काढ़ा बनाकर उसमें थोड़ी सी फिटकरी पीसकर मिला दें। गुनगुने काढ़े से आँखों की सिकाई (रूई से) आधा–आधा घंटे में तीन चार बार करें।

आँखों की रोहें, गुहेरी : दस पत्ते तुलसी के और एक लौंग सिल पर बारीक पीसकर रस निचोड़ लें। चार–चार घंटे बाद एक–एक बूंद ड्रापर से आँखों में डालें।

मोतिया बिन्द : तुलसी के पत्तों का रस चासनी में मिलाकर सुबह–शाम लगाने से जाला कट जाता है। अगर जाला पक भी गया हो तो भी लाभ पहुंचाता है।

शेष अगले अंक में

नोट : उपलब्ध सभी साम्रगी केवल पाठकों की जानकारी और ज्ञानवर्धन के लिए दी गई है। हमारा आपसे विनम्र निवेदन है कि किसी भी उपाय को आजमाने से पहले अपने चिकित्सक से अवश्य संपर्क करें। हमारा उद्देश्य आपको रोचक और ज्ञानवर्धक जानकारी मुहैया कराना मात्र है। चिकित्सक की सलाह का कोई विकल्प नहीं है।

हमारे महापुरुष

पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

◆ विजय सिंह माली
प्रधानाचार्य
श्री धनराज बदामिया रा.उ.मा.वि.
सादड़ी (पाली)

राष्ट्र की अर्चना ही मेरा धर्म है।
समाज की पूजा ही मेरी पूजा है।।

कहने वाले प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी, बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी, सामाजिक कार्यकर्ता, पत्रकार, वक्ता, पंजाब केसरी के नाम से लोकप्रिय लाला लाजपतराय का जन्म 28 जनवरी 1865 को पंजाब के मोगा जिले के दूधि के गांव में राधाकृष्ण अग्रवाल की धर्मपत्नी गुलाब देवी की कोख से हुआ। इनके पिता उर्दू फारसी के अध्यापक थे तथा शिक्षा में रुचि रखते थे तो माता धार्मिक विचारों की महिला थी। अपने गांव, लुधियाना व अंबाला से स्कूली शिक्षा प्राप्त की। कक्षा में अव्वल रहने वाले लाला जी ने लाहौर के सरकारी कॉलेज में कानून की पढाई कर हिसार व लाहौर में अभ्यास शुरु किया। लालाजी एक बैंकर थे अतः उन्होंने देश को पहला स्वदेशी बैंक दिया। उन्होंने 1894 में पंजाब नेशनल बैंक की आधारशिला रखी। 1905 में वाराणसी में हुए कांग्रेस अधिवेशन में ओजस्वी उद्बोधन ने लोगों की अंतरात्मा को झकझोर दिया। गोपाल कृष्ण गोखले, सुरेंद्र नाथ बनर्जी, विपिन चंद्र पाल से जुड़े। 1907 में सूरत अधिवेशन में भाग लिया। यहीं से कांग्रेस में गरम दल का उदय हुआ तथा लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, विपिन चंद्र पाल के रुप में लाल बाल पाल की तिकडी उभरी। 1905 में किए गए बंग भंग के विरोध में इनके भाषणों ने पंजाब के घर घर में देशभक्ति की आग धधका दी। लोग इन्हें पंजाब केसरी कहने लगे। स्वदेशी आंदोलन का समर्थन करने व राजनीतिक आंदोलन में भाग लेने के कारण इन्हें गिरफ्तार कर मांडले (म्यांमार) में निर्वासित कर दिया। वे स्वावलंबन से स्वराज प्राप्ति के पक्षधर थे। लाला लाजपतराय, बाल गंगाधर तिलक व विपिन चंद्र पाल की भी तिकडी पूरे देश में लोकप्रिय हो चुकी थी। 1908 में इंग्लैंड, 1913 में जापान, संयुक्त राज्य अमेरिका की यात्रा की। इन यात्राओं के दौरान बुद्धिजीवियों के सम्मुख भारत की आजादी का पक्ष रखा। इससे वहां कार्यरत स्वाधीनता सेनानियों को सहयोग मिला। इन्होंने पंजाब के क्रांतिकारियों को हर संभव सहयोग दिया।

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान लालाजी संयुक्त राज्य अमेरिका में थे। 1917 में न्यूयार्क शहर में इंडियन होमरुल लीग ऑफ अमेरिका की स्थापना की। 20 फरवरी 1920 को भारत लौटे और कांग्रेस के विशेष सत्र की अध्यक्षता की व असहयोग आंदोलन का समर्थन किया। जलियांवाला बाग हत्याकांड के विरोध में आंदोलन किया। 1921 में इन्होंने सर्वेंट्स आफ पीपुल्स सोसाइटी की स्थापना की। 1921–23 तक जेल में रहे। रिहाई के बाद स्वराज पार्टी में शामिल हो गए और विधानसभा के लिए चुने गए। लाला जी अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। अखिल भारतीय हिंदू महासभा के संस्थापक सदस्य रहे लालाजी को 1925 के कोलकाता अधिवेशन में महासभा का अध्यक्ष बनाया गया। हिंदू हितों के प्रति संवेदनशील लालाजी ने अछूतोद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1926, में उन्हें केंद्रीय विधानसभा का उपनेता चुना गया। 1928 में साइमन कमीशन के बहिष्कार के लिए विधानसभा में प्रस्ताव पेश किया।

30 अक्टूबर 1928 को साइमन कमीशन के विरोध में लाहौर में हुए प्रदर्शन का नेतृत्व किया। पंजाब केसरी लाला जी शेर की तरह दहाड़े। यह देखकर अंग्रेजी पुलिस ने जुलूस पर लाठी चार्ज किया, लाला जी पर भी कई लाठियां बरसाई गई जिसमें वे बुरी तरह घायल हो गए। लाला जी कह उठे– 'मेरे शरीर पर पड़ी एक–एक लाठी ब्रिटिश सरकार के ताबूत में एक–एक कील का काम करेगी।' 17 नवंबर 1928 को उनका देहावसान हो गया। लाला

जी की मृत्यु से सारा देश उद्वेलित हो गया, चंद्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव ने लाठीचार्ज का बदला लेने का निश्चय कर 17 दिसंबर 1928 को ब्रिटिश पुलिस अफसर सांडर्स को गोली मार हत्या कर दी।

हिंदी सेवा में भी लालाजी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शिवाजी, श्रीकृष्ण, मैजिनी, गेरीबाल्डी आदि महापुरुषों की जीवनियां लिखकर युवाओं को प्रेरित किया। पंजाब में हिंदी के प्रचार–प्रसार में सहयोग दिया। हिंदी के समर्थन में हस्ताक्षर अभियान चलाया। 1928 में अंग्रेजी में अनहैप्पी इंडिया, इंग्लैंड डेब्ट टू इंडिया, द पोलीटिकल फ्यूचर ऑफ इंडिया, द स्टोरी आफ माइ लाइफ लिखी।

लाला जी आर्य समाज रोहतक के सचिव बने तत्पश्चात उन्होंने आर्य समाज को पंजाब में लोकप्रिय बनाया। लाला हंसराज के साथ दयानंद एंग्लो वैदिक स्कूलों का विस्तार किया। आर्य गजट का संपादन किया। 1897–99 में अकाल पीड़ितों की सेवा की। कांगड़ा में आए भूकंप के समय बचाव राहत कार्य किए। समाज सुधारक के रूप में अस्पृश्यता, बाल विवाह जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया तथा विधवा विवाह, नारी शिक्षा व समुद्र यात्रा का समर्थन किया। उन्होंने अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए हरिजन सेवक संघ के माध्यम से कार्य किया। अनाथ निराश्रितों के लिए अनाथालयों की स्थापना का सुझाव दिया।

लालाजी का मानना था कि पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ शांतिपूर्ण साधनों से उद्देश्य पूरा करने के प्रयास को ही अहिंसा कहते हैं।

उनका मानना था कि पराजय और असफलता कभी कभी विजय की ओर जरुरी कदम होते हैं।

आज लाला जी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन महान स्वतंत्रता सेनानी और क्रांतिकारियों के प्रेरणा स्त्रोत लालाजी के कार्य और विचार सदैव हमको प्रेरित करते रहेंगे। महात्मा गांधी ने ठीक ही कहा –

'लाला जी अपने आप में एक संस्था थे। उनकी राष्ट्रभक्ति किसी भी प्रकार से संकीर्ण नहीं थी, उनकी गतिविधियां बहु आयामी थी, शायद ही कोई ऐसा जन आंदोलन रहा होगा जिसमें लालाजी की भागीदारी न रही हो। उन्होंने ऐसे समय में राष्ट्र के लिए अपने प्राण न्यौछावर किये जब सामान्य तौर पर ऐसा नहीं होता था।'

पृष्ठ सं. 21 का शेष

रणकपुर

पारसनाथ को समर्पित दो मंदिर हैं, जिनकी नक्काशी खजुराहो की याद दिलाती है। 8वीं शताब्दी में बने सूर्य मंदिर की दीवारों पर योद्धाओं और घोड़ों के चित्र उकेरे गए हैं। मुख्य मंदिर से लगभग 1 किलोमीटर की दूरी पर अंबा माता मंदिर है।

मंदिर के निर्माताओं ने जहाँ कलात्मक दो मंजिला भवन का निर्माण किया है, वहीं भविष्य में किसी संकट का अनुमान लगाते हुए कई तहखाने भी बनाए हैं। इन तहखानों में पवित्र मूर्तियों को सुरक्षित रखा जा सकता है। ये तहखाने मंदिर के निर्माताओं की निर्माण संबंधी दूरदर्शिता का परिचय देते हैं।

निकटवर्ती दर्शनीय स्थल :

सादड़ी –

(8 किमी.) यह स्थान अपने यहाँ बने कुछ खूबसूरत मंदिरों और खुदाबक्श बाबा की पुरानी दरगाह के लिए जाना जाता है। इन मंदिरों में से सबसे प्राचीन मंदिर वराह अवतार मंदिर और चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर है।

देसूरी –

(16 किमी.) भगवान शिव, हनुमान और नवी माता को समर्पित तीन मंदिर यहाँ की विशेषता हैं। यहाँ एक पुरानी मस्जिद भी है। यहाँ पास ही में परशुराम महादेव का एक मंदिर भी है। यह कुम्भलगढ़ तहसील के अन्तर्गत आता है।

मुच्छला महावीर –

यह मंदिर कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य में स्थित है। इस मंदिर की विशेषता मूछों में भगवान महावीर की प्रतिमा है। मंदिर के द्वार पर बने दो हाथी वास्तुशिल्प का सुन्दर उदाहरण हैं। यहाँ रहने वाली

गरासिया जनजाति के रंगबिरंगे कपड़े सैलानियों को आकर्षित करते हैं।

रणकपुर हेतु आवागमन :

वायु मार्ग – नजदीकी हवाई अड्डा उदयपुर है। दिल्ली और मुम्बई से यहां के लिए नियमित उड़ानें हैं।

रेल मार्ग – निकटतम रेल्वे स्टेशन भी उदयपुर ही है। यहां के लिए सभी प्रमुख शहरों से रेलगाड़ियाँ उपलब्ध हैं।

सड़क मार्ग – रणकपुर उदयपुर से केवल 96 किमी. दूर है। यह स्थान देश के प्रमुख शहरों से सड़कों के जरिये जुड़ा हुआ है। उदयपुर से बसें एवं प्राईवेट टैक्सी उपलब्ध रहती हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा सामाजिक जरूरतों की उपज

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
सहायक आचार्य, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुरसिटी (राजस्थान)

भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने भारत देश को बनाया है। जिसमें मानव जीवन के लिए भाव, राग और ताल समाहित है। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति वेद, तंत्र एवं योग की त्रिवेणी है। हजारों साल पहले जब वेदों की रचना हुई। ऐसे सैकड़ों उदाहरण ऋग्वेद में मिलते हैं। ऋग्वेद की शुरुआती ऋचाओं में कहा जाता है कि 'आ नो भद्राः क्रतवो यंतु विश्वतः' 'सात्विक साधु विचार हर दिशा से आने दो। स्वयं को किसी चीज से वंचित न करो। अच्छी बातों को ग्रहण करो, तभी भला होगा।'

भारतीय परंपरा के अनुसार हमारे चिंतन में कई धाराएं हैं, लेकिन पश्चिम ने केवल एक ही धारा को समझा और फैलाया है। विदेशी ताकतों ने हमेशा से ही हमारी ज्ञान परंपरा को दबाकर रखने की कोशिश की है। हमारे विज्ञान और सेवा भाव को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश की गई है, जिसके कारण हमने अपनी समृद्ध ज्ञान परंपरा को बहुत हद तक खो दिया है। आज फिर से हमें अपनी ज्ञान परंपरा और सामाजिक व्यवस्था को समझने और अपने तरीके से परिभाषित करने की जरूरत है। अपनी ज्ञान परंपरा, सामाजिक व्यवस्था और जीवन शैली को बाजारवाद से बचाने की जरूरत है। हमें पश्चिमी सभ्यताओं और विदेशी ज्ञान–विज्ञान को दरकिनार कर अपनी परम्पराओं और मान्यताओं का पुनरोत्थान करते हुए भारतीयता में पूरी तरह रमना होगा। सभी विचारधाराओं के लोगों से संवाद करना होगा और उनको साथ लेकर चलना होगा। हमारी परंपरा विविधताओं का सम्मान करने की है और उनमें एकता स्थापित करने की है, जिसे आज अच्छी तरह से व्यवहार में उतारना होगा ताकि भारत पूरे विश्व में एक बड़ी ताकत के रूप में उभर सके।

भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है। इस ज्ञान परंपरा में आधुनिक विज्ञान प्रबंधन सहित सभी क्षेत्रों के लिए अद्भुत खजाना है। भारतीय दृष्टिकोण से ही ज्ञान परंपरा का अध्ययन कर हम एक बार फिर विश्वगुरु बन सकते हैं। हमें अपनी मानसिकता को बदलकर अपने जीवन में भारतीयता को अपनाने की जरूरत है। पश्चिम के विकासवादी मॉडल को छोड़कर ही हम दुनिया में खुशहाली ला सकते हैं। हमने अब तक जो कुछ पढ़ा है जो भी हमें पढ़ाया गया है, ज्ञान संगम जैसे कार्यक्रमों में शामिल होकर लगता है कि वह एकतरफा है। हर विषय को पश्चिम के नजरिए से प्रस्तुत कर हमने प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का अपमान किया है। हम भारतीय अपनी परम्परा, संस्कृति, ज्ञान और यहाँ तक कि महान विभूतियों को तब तक खास तवज्जो नहीं देते जब तक विदेशों में उसे न स्वीकार किया जाए। यही कारण है कि आज यूरोपीय राष्ट्रों और अमेरिका में योग, आयुर्वेद, शाकाहार, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, होम्योपैथी और सिद्धा जैसे उपचार लोकप्रियता पा रहे हैं जबकि हम उन्हें बिसरा चुके हैं। हमें अपनी जड़ी–बूटियों, नीम, हल्दी और गोमूत्र का ख्याल तब आता है जब अमेरिका उन्हें पेटेंट करवा लेता है। योग को हमने उपेक्षित करके छोड़ दिया पर जब वही 'योगा' बनकर आया तो हम उसके दीवाने बने बैठे हैं। पाश्चात्य संस्कृति में पले–बसे लोग भारत आकर संस्कार और मंत्रोच्चारण के बीच विवाह के बंधन में बंधना पसन्द कर रहे हैं और हमें अपने ही संस्कार दकियानूसी और बकवास लगते हैं। हमारे देश में प्रत्येक राज्य की अपनी भाषा है। भाषाओं की विभिन्नता के समावेश के बावजूद भी अंग्रेजी को बोलचाल का माध्यम बनाया जाता है। मुझे समझ नहीं आता कि जितनी मेहनत हम लोग अंग्रेजी सीखने में करते हैं उतनी मेहनत करके हम अपने ही भारत देश की किसी और भाषा को सीखने में क्यों नहीं करते हैं? पाश्चात्य अथवा अंग्रेजी संस्कृति को दोष देने से पहले हमको अपने गिरेबान में झांककर देखना चाहिए कि वो खुद अपनी संस्कृति के प्रति कितना निष्ठावान है। भारतीय प्रचार माध्यम के बीच स्वस्थ प्रतियोगिता के स्थान पर पश्चिमी मानदंडों के अनुसार प्रतिद्वंद्वी को मिटाने की होड़ लगी हुई है। सनसनीखेज पत्रकारिता के माध्यम से आज पत्र–पत्रिकाएं, ऐसी समाजिक विसंगतियों की घटनाओं की खबरों से भरी होती हैं जिसको पढ़कर हमारी युवाओं की उत्सुकता उसके बारे में और जानने की बढ़ जाती है। युवा गलत तरह से प्रसारित हो रहे विज्ञापनों से इतने प्रभावित हो रहे हैं कि उनका अनुकरण करने में जरा भी संकोच नहीं कर रहे हैं।

आज हम आपने आचरण से गांधी जी के आदर्शों को तिलांजलि दे रहे हैं पर अमेरिका में पिछले कुछ वर्षों में करीब पचास विश्वविद्यालयों और कॉलेजों ने गांधीवाद पर कोर्स आरम्भ किए हैं। यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्ट वर्जीनिया, यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई, जॉर्ज मेरून यूनिवर्सिटी के अलावा और भी कई विश्वविद्यालयों ने अपने यहाँ गांधीवाद विशेषकर गांधी जी की अहिंसा पर आधारित पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए हैं। और विरोधाभास ही लगता है कि हम भारतीय आत्मगौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान की अनदेखी करते हुए अपनी संस्कृति और उसकी समृद्ध विरासत को नकारने का प्रयास कर रहे हैं। परिवर्तन प्रकृति का नियम है, लेकिन ये परिवर्तन हमें पतन की ओर ले जाएगा। एक समय था जब हमारे युवाओं के आदर्श, सिद्धांत, विचार, चिंतन और व्यवहार सब कुछ भारतीय संस्कृति के रंग में रंगे हुए होते थे। वे स्वयं ही अपनी संस्कृति के संरक्षक थे, परंतु आज उपभोक्तावादी पाश्चात्य संस्कृति की चकाचौंध से भ्रमित युवा वर्ग को भारतीय संस्कृति के अनुगमन में पिछड़ेपन का एहसास होने लगा है। जिस युवा पीढ़ी के ऊपर देश के भविष्य की जिम्मेदारी है, जिसकी ऊर्जा से रचनात्मक कार्य सृजन होना चाहिए, उसकी पसंद में नकारात्मक दृष्टिकोण हावी हो चुका है। संगीत हो या सौंदर्य, प्रेरणास्रोत की बात हो या राजनीति का क्षेत्र या फिर स्टेटस सिंबल की पहचान सभी क्षेत्रों में युवाओं की पाश्चात्य संस्कृति में ढली नकारात्मक सोच स्पष्ट होने लगी है। आज महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों

के साथ विद्यालयों में शिक्षा के लिए जा रहे युवा मन व विद्यार्थियों से जानकारी लें तो पता लगेगा कि हर दूसरे के कानों में तेज धुनों पर जो संगीत बज रहा है वो पॉप संगीत है। युवा वर्ग के लिए ऐसी धुन बजाना दुनिया के साथ चलने की निशानी बन गया है। युवा वर्ग के अनुसार जिंदगी में तेजी लानी हो या कुछ ठीक करना हो तो गो इन स्पीड एवं पॉप संगीत सुनना तेजी लाने में सहायक है। लोक संगीत के स्थान पर युवा पीढ़ी ने पॉप संगीत को स्थापित करने का फैसला कर लिया है। हमारे राष्ट्र में मूलभूत रूप से सांस्कृतिक एकता है। हमारी मूल संस्कृति 'वसुधैव कुटुंबकम्' वाली संस्कृति है जिसका अस्तित्व सारे भारत में है। हमारे साहित्य में एकता है, एकरूपता नहीं, एकात्मता है। हम संकीर्ण राजनीतिक स्वार्थों के ऊपर उठ सकते हैं। हमारी भाषाओं में अधुनातन विज्ञान–प्रौद्योगिकी को अभिव्यक्त करने की शक्ति है। भारत में न केवल विश्व–शक्ति बनने की क्षमता है वरन विश्व को भोगवाद के राक्षस से बचाने की भी क्षमता है। अंग्रेजी राज्य में जो विश्वविद्यालय भारत में खुले, वे पाश्चात्य ज्ञान परंपरा की नुमाइंदगी कर रहे थे। इस दौरान भारतीय ज्ञान–विज्ञान की परंपरा को भारी धक्का लगा। राष्ट्र की जरूरतों, व्यावहारिकता और समाज से जुड़ाव जैसी बातों को हम भूल गए। हम सब अपने–अपने स्कूल के दिनों में पाइथागोरस प्रमेय से परिचित होते रहे हैं, लेकिन यह जानना दिलचस्प होगा कि पाइथागोरस से कई सौ साल पहले भारत में इसका प्रयोग किया जाने लगा था। भारत में जब ऋग्वेद की रचना होने लगी तो अलग–अलग यज्ञ के लिए यज्ञवेदी बनने की बात हुई। यह निश्चित किया गया कि किस यज्ञ के लिए किस क्षेत्रफल और आकार–प्रकार की यज्ञवेदी बनाई जाएगी। समाज की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए गणित का उपयोग किया गया और रेखागणित (ज्योमेट्री) उत्पन्न हुई। पाइथागोरस जिस गणित को दुनिया के सामने लेकर आए, उससे कई सौ साल पहले बौधायन ने शुल्ब–सूत्र में इसकी विस्तार से चर्चा कर दी थी। आज भी भारत का हर राज–मिस्त्री लंबे धागे के साथ वजन लगाए रखता है और भवन निर्माण में उसका तरह–तरह से बखूबी इस्तेमाल करता है। वह शुल्ब–सूत्र की ही उपज है। इसी उपकरण की मदद से वैदिक काल में लोग विभिन्न आकार वाली यज्ञवेदी की रचना करते थे। भारतीय ज्ञान–विज्ञान की परंपरा में केवल बौधायन ही नहीं रहे हैं, बल्कि कात्यायन भी हुए। ऐसे तमाम गणितज्ञ भारत में हुए हैं, जिन्होंने सामाजिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर गणित की रचना की। कुल 16 शुल्ब–सूत्र लिखे गए। निश्चित रूप से पाइथागोरस का प्रमेय गणित का ऊंचा सिद्धांत है, लेकिन भारतीय समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर वैदिक काल में जिस गणित की रचना की गई थी, वह आज के वर्तमान पश्चिमी परिभाषा से अलग अद्भुत और उन्नत है। भारत का ज्ञान और विज्ञान यहां की सामाजिक जरूरतों की उपज रही है। हमारे यहां यही परंपरा रही है, लेकिन आज हम इसमें पिछड़ रहे हैं। हमारे पिछड़ने और उदासीन रहने के कारण तिब्बती आध्यात्मिक नेता दलाई लामा कहते हैं कि भारत प्राचीन ज्ञान की उपेक्षा कर रहा है और पश्चिमी संस्कृति की तरफ बढ़ रहा है। उत्तर प्रदेश के वाराणसी में उन्होंने कहा था– कि आधुनिक भारतीय प्राचीन विचारों की उपेक्षा कर रहे हैं। आधुनिक भारतीय बहुत पश्चिमी हैं। भारतीयों को भारत के प्राचीन ज्ञान पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आधुनिक भारतीयों को अपने ज्ञान को नहीं भूलना चाहिए। संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने, खाने–पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घ काल तक अपनायी गई पद्धतियों का परिणाम होता है। भारत इस धरती पर एकमात्र देश है जो आधुनिक सुविधा, शिक्षा, विज्ञान और प्रौद्योगिकी को जोड़ सकता है। हमें धार्मिक विश्वास को छूने के बिना शिक्षा, प्राचीन भारतीय ज्ञान के आंतरिक मूल्यों को शामिल करना चाहिए। आर्यभट्ट, चरक, कनाद, नागार्जुन, हर्षवर्धन, अगस्त्य, भारद्वाज ऋषि, शंकराचार्य, आचार्य अभिनव गुप्त, स्वामी विवेकानंद के साथ सैकड़ों महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपने ज्ञान से विश्व की ज्ञान परंपरा को समृद्ध किया है। हमारी प्राचीन भारतीय संस्कृति समूचे विश्व की संस्कृतियों में सर्वश्रेष्ठ और समृद्ध संस्कृति है। भारत विश्व की सबसे पुरानी सभ्यता का देश है। भारतीय संस्कृति के महत्वपूर्ण तत्व शिष्टाचार, तहजीब, सभ्य संवाद, धार्मिक संस्कार, मान्यताएं और मूल्य आदि हैं। हालांकि आज के परिवेश में हर एक की जीवन शैली आधुनिक हो रही है।

भारतीय लोग आज भी अपनी परंपरा और मूल्यों को बनाए हुए हैं। विभिन्न संस्कृति और परंपरा के लोगों के बीच की घनिष्ठता ने भारत को देश बनाया है जिसमें मानव जीवन के लिए भाव, राग और ताल समाहित है। इसलिए हम कह सकते हैं कि भारतीय संस्कृति वेद, तंत्र एवं योग की त्रिवेणी है। इस संदर्भ में स्वामी विवेकानंद शिष्यों को बताते है कि "यदि कोई अपने ही धर्म तथा संस्कृति की विशेष रूप से विद्यमानता का स्वप्न देखता है, तो मुझे उस व्यक्ति के प्रति दिल से सहानुभूति है और यह कहना चाहता हूँ कि बहुत जल्द प्रत्येक धर्म एवं संस्कृति के बैनर पर बिना संकोच सहायता करो, संघर्ष नहीं, समावेशन करो विध्वंस नहीं, मेल–मिलाप तथा शांति रखो।"

भारत अपने भाव, राग और ताल से स्पंदन उत्पन्न कर संपूर्ण विश्व को मानवता, भाईचारा और संवेदना का पारिवारिक संदेश देना चाहता है, अपनी जीवंत अमूर्त विरासत जो इसकी वैश्विक सभ्यता की विरासत है। इस विरासत से विभिन्न राष्ट्रों, समाजों तथा संस्कृतियों के बीच संस्कृति एवं सभ्यता का एक संवाद बनाने की प्रक्रिया आरंभ होती है। भारतीय ज्ञान–विज्ञान परंपरा को स्थापित करने के प्रयास स्वाधीनता मिलने के साथ ही किए जाने चाहिए थे, लेकिन औपनिवेशक मानसिकता के कारण हमने अपने गौरवशाली इतिहास के पन्ने कभी पलटकर देखने की कोशिश ही नहीं की। हमें यह समझना चाहिए कि जिस समाज ने मुझे एक पहचान दी है, सब कुछ दिया है, उसके लिए मुझे भी कुछ करना है। सूचना के स्तर पर ज्ञान प्राप्त करना ही शिक्षा का अंतिम लक्ष्य नहीं होता बल्कि समझ, विचार एवं बुद्धि से संजोए हुए ज्ञान की प्राप्ति करना ही मानवीय पांडित्य की वास्तविक प्राप्ति तथा जीवन बोध का मूल बिंदु कहा जा सकता है। पश्चिमी ज्ञान परिपाटियों का अंधाधुंध अनुकरण कभी लाभदायक नहीं हो सकता। यदि हम अपने मूल विचार नहीं करते और अपने विवेक तथा अपने मौलिक ज्ञान के दर्शन की गहराई तक नहीं जाते। पश्चिमी

और भारतीय ज्ञान परंपरा का तुलनात्मक अध्ययन करते हुए हम पाते हैं कि पश्चिमी संस्कृति के भौतिकतावाद ने उन्नति तो बहुत की है लेकिन यह उन्नति मानसिक खुशहाली को साकार करने से वंचित रह जाती है।

स्वामी विवेकानंद की अनन्य शिष्या निवेदिता ने एक राष्ट्र के रूप में भारत के आंतरिक मूल्यों एवं भारतीयता के महान गुणों की खोज की है। उनकी पुस्तक 'द वेब ऑफ इंडियन लाइफ' निबंधों, लेखों, पत्रों एवं 1899–1901 के बीच एवं 1908 में विदेशों में दिए गए उनके व्याख्यानों का एक संकलन है। सभी भारत के बारे में उनके ज्ञान की गहराई के प्रमाण हैं। भारतीय मूल्यों एवं परम्पराओं की महान समर्थक निवेदिता ने 'वास्तविक शिक्षा– राष्ट्रीय शिक्षा' के ध्येय को आगे बढ़ाया और उनकी आकांक्षा थी कि भारतीयों को 'भारत वर्ष के पुत्रों एवं पुत्रियों' के रूप में न कि 'यूरोप के भद्दे रूपों' में रूपांतरित किया जाए। वे चाहती थीं कि भारतीय महिलाएं कभी भी पश्चिमी ज्ञान और सामाजिक आक्रामकता के मोह में न फंसे और 'अपने वर्षों पुराने लालित्य एवं मधुरता, विनम्रता और धर्म निष्ठा' का परित्याग न करें। उनका विश्वास था कि भारत के लोगों को भारतीय समस्या के समाधान के लिए एक 'भारतीय मस्तिष्क' के रूप में शिक्षा प्रदान की जाए। क्या हम ऐसा नहीं सोच सकते। हम उदीयमान भारत के ऊर्जावान युवा है, सोचने के साथ करने का हौसला कर ले तो कुछ भी असंभव नहीं हो सकता। भारतीय ज्ञान–विज्ञान की यह सनातन परंपरा अनादिकाल से है। वह तक्षशिला हो, नालंदा हो या विक्रमशिला विश्वविद्यालय सभी ज्ञान केंद्रों में यह परंपरा जुड़ी रही है, इसलिए वैदिक काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा उच्च स्तरीय रही है। शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय दृष्टिकोण को विकसित करने की जरूरत है। शिक्षा में भारतीय पुरातन ज्ञान परंपरा व संस्कृति के समावेश के नजरिये से यह संगम मात्र विकल्प नहीं है, बल्कि इस दिशा में सच्चा प्रयास है। भारत की प्राचीन ज्ञान परंपरा कला संस्कृति, दर्शन, समाज शास्त्र, विज्ञान व प्रबंधन समेत विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक दृष्टिकोण देती है। हमें इस दृष्टिकोण को शिक्षा के क्षेत्र में अपनाकर राष्ट्र के विकास की प्रक्रिया को और मजबूत बनाना होगा। मौजूदा शिक्षण पद्धति में पश्चिम पक्षीय झुकाव ज्यादा है। ऐसे में शिक्षण पद्धति में भारतीय दृष्टिकोण के विकास के लिए गैर सरकारी व स्वायत्त प्रयासों को बढ़ावा देना, बदलते वैश्विक परिवेश में समय की जरूरत बन चुकी है। मैं समझता हूँ कि भारत के ऊपर जैसे–जैसे पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव पड़ता गया, वैसे–वैसे इसकी सनातनी ज्ञान–विज्ञान की परंपरा छिन्न–भिन्न होती जा रही है। हालांकि, नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालय के पतन के बाद से ही इसकी शुरुआत हो गई थी और विद्या का स्तर नीचे आने लगा था। इसका मतलब यह नहीं कि हम वर्तमान विश्वविद्यालयीन शिक्षा परंपरा को पूरी तरह खारिज कर दें, क्योंकि विकल्पहीनता के दौर में इन विश्वविद्यालयों ने एक विकल्प दिया था। इन्हीं शिक्षा संस्थाओं से कई प्रतिभाएँ निकलीं, लेकिन आजादी के बाद हम जिस रास्ते पर चले, उससे भारतीय ज्ञान परंपरा का अधिक नुकसान हुआ है। आज भारतीय ज्ञान को स्थापित करने की नहीं बल्कि इस ज्ञान के व्यापक भंडार को खोजने की जरूरत है। प्राचीन ग्रंथों में छिपे इस ज्ञान के खजाने को खोजकर, उसे सँवारकर मानव कल्याण के लिए इस्तेमाल में लाने की आवश्यकता है।

आज भारत के शैक्षणिक संस्थाओं को इस कार्य के लिए आगे आना होगा और समर्पित भाव से ऐसी परियोजनाओं में जुटना होगा ताकि कोई बाहरी संस्था या इंसान इस भण्डार की खोजकर उसको एक विकृत रूप में दुनिया के सामने पेश न करे। यहां का ज्ञान–विज्ञान युगों से प्रकृति के अनुकूल रहा है और इसी कारण भारत की जीवनशैली भी औरों से हमेशा श्रेष्ठ रही है। आज यही भारत अपनी इसी विशिष्टता को भूलकर आधुनिक दुनिया के पथ पर चलने लगा है। भारतीय ज्ञान, संस्कृति और परंपराओं में ही वह सामर्थ्य है, जिससे भारत अकेले नहीं बल्कि पूरे विश्व को शांति पथ पर ला सकता है। भारत को अपने मूल से जुड़े रहने की जरूरत है। भारत अपने ज्ञान को पुनर्जीवित कर दुनिया को बेहतर दिशा की ओर ले जाने में अपना योगदान दे सकता है। भारतीय ज्ञान परंपराएं मनुष्य की आंतरिक शांति और मन की भावनाओं को नियंत्रण में रख सकती है। आज हमारे सामने कई समस्याएं हैं जिनका समाधान भारत के प्राचीन ज्ञान और विज्ञान में हैं। देश की सरहद से ऊपर उठकर हमें मानवता के हित में कार्य करना होगा। भारतीय ज्ञान–विज्ञान की यह सनातन परंपरा अनादिकाल से है। वह तक्षशिला हो, नालंदा हो या विक्रमशिला विश्वविद्यालय सभी ज्ञान केंद्रों में यह परंपरा जुड़ी रही है, इसलिए वैदिक काल से ही भारत की ज्ञान परंपरा उच्च स्तरीय रही है।

बहरहाल, ज्ञान संगम के बहाने हमें एक नया ज्ञान दर्शन चाहिए जिसमें नीति नहीं ज्ञान केंद्र में हो। समाज का दर्शन और ज्ञान का दर्शन अलग–अलग है। ज्ञान का काम समाज के दर्शन को समाज कल्याण में मूर्त करना है जबकि समाज का दर्शन ज्ञान से जुड़ अपने आप को प्रकाशवान करना चाहता है। वैचारिक शून्य को भरे बिना, जनता का प्रशिक्षण किए बिना यह संभव नहीं है। हमें इसके लिए समाज निहित ज्ञान को ही शक्ति केंद्र बनाना होगा। लोगों की आकांक्षाएं, कामनाएं, आचार और व्यवहार मिलकर ही समाज बनाते हैं। इसलिए एक सामाजिक संस्कृति पैदा करना आज की बड़ी जरूरत है, जो कमजोर होते, टूटते समाज को शक्ति दे सके। राज्यशक्ति ने जिस तरह निरंतर ज्ञान शक्ति को कमजोर किया है। ज्ञान शक्ति की सामूहिकता को नष्ट किया है उसे जगाने की जरूरत है। इसमें कोई दो राय नहीं कि वेदों से लेकर आज के युग तक भारत की प्राणवायु धर्म है। वही हमारी चेतना का मूल है। यह धर्म ही हमारी सामाजिक संस्कृति का निर्माता है। आध्यात्मिक अनुभवों और अंतस की यात्रा के व्यापक अनुभवों वाला ऐसा कोई देश दुनिया में नहीं है। भारत का यह सत्व या मूल ही उसकी शक्ति है। जिन्हें धर्म का अनुभव नहीं वे विचारधाराएँ इसलिए भारत को संबोधित ही नहीं कर सकतीं। वे भारत के मन और अंतस को छू भी नहीं सकतीं। गांधी अगर भारत के मन को छू पाए तो इसी आध्यात्मिक अनुभव के नाते। ऐसे कठिन समय में जब हमारे महान अनुभवों, महान विचारों पर अवसाद की परतें जमी हैं, धूल की मोटी परत के बीच से उन्हें झाड़–पोंछकर निकालना और अपने ज्ञान पर भरोसा करते हुए, उनकी आंखों में झिलमिला रहे भारत के सपनों के साथ तालमेल बिठाना समय की जरूरत है। ज्ञान संगम जैसे आयोजन भारत के ज्ञान क्षितिज को उसका खोया हुआ आत्मविश्वास लौटा सकें तो सार्थकता सिद्ध होगी।

दक्षता पदक

स्काउट गाइड ज्योति में दक्षता पदकों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की जा रही हैं। आशा है यह जानकारी प्रशिक्षण के मद्देनज़र उपयोगी साबित होगी। इस अंक में **'उपचारक' एवं 'कैंसर जागरूकता'** दक्षता बैज की जानकारी दी जा रही है।

उपचारक
AMBULANCE MEN

प्रत्येक स्काउट को जीवन में कई बार अचानक ऐसी दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है, जिनके लिए आवश्यक ज्ञान से किसी की जान बचाई जा सकती है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए **उपचारक दक्षता बैज** का पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है। सफेद कपड़े पर लाल रंग में धन के चिन्ह (+) वाला यह बैज दोनों कन्धों पर 'शोल्डर बैज' के ठीक नीचे की ओर लगाया जाता है। इस दक्षता बैज के लिए निम्नानुसार पाठ्यक्रम पूर्ण करना आवश्यक है –

(1) प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय सोपान में प्राथमिक सहायता से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर दे सके।

(2) अधिक व कम रक्तस्राव को रोकने के उपाय की जानकारी।

(3) टूटे हुए अंग की पहचान कर सके व उसे सही ढंग से बांध सके।

(4) गला घुट जाने की स्थिति में–'हेमलिच–विधि' से उपचार करना जाने।

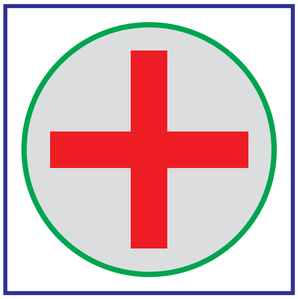

(5) 'मुंह से मुंह विधि' द्वारा कृत्रिम श्वास देने का प्रदर्शन करे।

(6) उपलब्ध साधनों द्वारा तात्कालिक स्ट्रेचर बनाने तथा गोल पट्टी बांधने का प्रदर्शन करे।

(7) मौखिक, लिखित या टेलीफोन द्वारा सही सन्देश भेजने का प्रदर्शन करना।

(8) केवल एक ही प्राथमिक सहायक होने की स्थिति में घायल को ले जाने की दो विधियों का तथा दो प्राथमिक सहायक होने की स्थिति में घायल को ले जाने की दो अन्य तरीकों का प्रदर्शन करे।

कैंसर जागरूकता
CANCER AWARENESS

मनुष्य के शरीर को कब कोई जानलेवा बीमारी घेर ले, कोई नहीं जानता। ऐसी ही बीमारी कैंसर के कारण व उपचार की जानकारी मानव को होनी चाहिये। कैंसर के बारे में जानना और आम जनता को जागरुक करना लाभकारी रहता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए **कैंसर जागरुकता दक्षता बैज** का पाठ्यक्रम निम्नानुसार निर्धारित किया गया है।

(1) दैनिक जीवन में कैंसर उत्पन्न करने वाले तत्वों को पहचान सके।

(2) विस्तारपूर्वक जाने के कैंसर के रोगी का उपचार किस प्रकार किया जाता है तथा रोग के कारण को बिना कम किए, रोग को कैसे कम किया जा सकता है।

(3) निम्न के सम्बन्ध में जन–जागरुकता के लिए योजना बनाएं–

(अ) कैंसर के सात चिन्ह और सात लक्षण।

(ब) कैंसर का उपचार सम्भव है, यदि इसकी पहचान जल्दी हो जाए।

(स) कैंसर उत्पन्न करने वाली हानिप्रद आदतों से छुटकारा पाना।

(द) कैंसर से जुड़ी कल्पित–कथाओं (अन्धविश्वासों) को दूर करना।

गतिविधि पञ्चांग

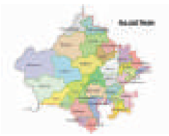

राज्य पञ्चांग

PROPOSED

नाम शिविर/गतिविधि	स्थान	तिथियां
युवा दिवस एवं राज्य पुरस्कार समारोह	जगतपुरा, जयपुर	10 से 13.01.2026 तक
युवा दिवस/युथ कमेटी बैठक	स्था.संघ /जिला स्तर पर	12.01.2026 को
सड़क सुरक्षा सप्ताह	जिला/राज्य स्तर	तिथियों के अनुसार
हिमालय वुड बैज कोर्स (स्काउट विंग)	अजमेर	17 से 23.01.2026
हिमालय वुड बैज कोर्स (गाइड विंग)	अजमेर	17 से 23.01.2026
गणतन्त्र दिवस	सभी स्तरों पर	26.01.2026
शहीद दिवस – प्रार्थना सभा	ग्रुप/स्था.संघ स्तर	30.01.2026
राज्य स्तरीय मासिक ऑर्गेनाइजर्स ऑनलाइन संगोष्ठी	राज्य स्तर पर	30.01.2026 तक
पाक्षिक ऑर्गेनाइजर्स ऑनलाइन संगोष्ठी	मण्डल स्तर पर	30.01.2026 तक
द्वितीय/तृतीय सोपान प्रशिक्षण शिविर	स्थानीय संघ स्तर	01 से 05.02.2026
स्काउटर/गाइडर बेसिक कोर्स	जिला/मण्डल स्तर	01 से 07.02.2026
उर्स मेला अजमेर	जिला स्तर	मेले के अनुसार
द्वितीय/तृतीय सोपान जांच शिविर	स्थानीय संघ स्तर	06 से 08.02.2026
नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियां	ग्रुप/जिला/मण्डल स्तर पर	11 से 17.02.2026
रीजनल लेवल कब बुलबुल महोत्सव	बीकानेर	19 से 23.02.2026
राज्य स्तरीय कब बुलबुल महोत्सव	बनीपार्क जयपुर	19 से 23.02.2026

राष्ट्रीय पञ्चांग

PROPOSED

Name of Camp/Activity	Date	Place
National Youth Adventure Programme	Dec.2025 to March 2026	Sarsai, Manali, HP
National Youth Adventure Programme	Oct.2025 to March 2026	Sam Sand Dunes, Jaisalmer
27th International Adventure Programme	02 to 06 Feb. 2026	NAI, Pachmarhi
National Integration Camp	19 to 23 Feb. 2026	NYC, Palwal, Haryana
National Level Cub/Bulbul Utsav	19 to 23 Feb. 2026	NYC, Palwal, Haryana

अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चांग

PROPOSED

Name of Camp/Activity	Date	Place
Camp Next 2026, International Camp	25 - 30 January, 2026	Taichung City, Taiwan
National Rover Conference at Taiwan 2026	06 - 10 Feb. 2026	Taoyuan City, Taiwan
Jamboree Denmark 2026	18 - 26 July 2026	Hedeland Naturepark
Icelandic International Jamboree 2026	20 - 26 July 2026	Hamrar Outdoor Scout Center
26th World Scout Jamboree-Poland	30 July - 08 August 2027	Gdansk, Northern Poland

National Headquarters website : www.bsgindia.org

रन फॉर विकसित राजस्थान

मिशन लाइफ कार्यक्रम में स्काउट गाइड के साथ चूरू विधायक श्री हरलाल सिंह सहारण, जिला कलक्टर श्री अभिषेक सुराणा एवं अन्य जिला स्तरीय अधिकारीगण

रन फॉर विकसित राजस्थान कार्यक्रम भरतपुर में अतिरिक्तजिला कलक्टर (शहर) श्री राहुल सैनी के साथ भारत स्काउट व गाइड परिवार भरतपुर की टीम

प्रतापगढ़ जिले में रन फॉर विकसित राजस्थान में जिला स्तरीय प्रशासनिक अधिकारियों के साथ सहभागिता करते हुए जिले के स्काउट-गाइड, रोवर-रेंजर

रन फॉर विकसित राजस्थान में सहभागिता करते हुए जिला जयपुर की गाइड्स व रेंजर्स अपनी लीडर्स के साथ। इस जिला स्तरीय कार्यक्रम में 200 गाइड व रेंजर्स ने भाग लिया।

19वीं राष्ट्रीय जम्बूरी, लखनऊ में बैण्ड के उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए चन्द्राज पब्लिक स्कूल, सोजत पाली के प्रधानाचार्य आलोक शर्मा को सम्मानित करते हुए पाली जिले के प्रभारी मंत्री श्री झाबर सिंह खर्रा एवं
सिरोही जालौर के माननीय सांसद श्री लुंबाराम जी चौधरी सिरोही के जिला स्तरीय कब बुलबुल उत्सव का अवलोकन करते हुए

प्रकाशक व मुद्रक : डॉ. पी.सी. जैन, राज्य सचिव, राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर
फोन नं. 0141-2706830 द्वारा मैसर्स हरिहर प्रिण्टर्स, जे-97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर-302004 फोन : 0141-2600850 से मुद्रित।

हिन्दी मासिक एक प्रति रूपये पन्द्रह
प्रकाशन - प्रत्येक माह
पंजीकृत समाचार पत्रों की श्रेणी के अन्तर्गत
आर.एन.आई. नम्बर : RAJ BIL/2000/01835
प्रेषक :-
राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, बजाज नगर, जयपुर-302015
फोन : 0141-2706830, 2941098
ई-मेल : scoutguidejyoti@gmail.com